Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 38

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

21 सितम्बर 2017 ई. 29 ज़िलहज्जा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैंने अपनी पुस्तक "किश्ती नूह" में यह भविष्यवाणी की थी कि प्लेग के समय में हमें टीका लगवाने की आवश्यकता नहीं होगी। ख़ुदा हमारी और उन सब की जो हमारे घर में हैं स्वयं रक्षा करेगा तथा अपेक्षाकृत कुशलता हमारे साथ रहेगी।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

41. इकतालीसवां निशान - यह है कि बीस या इक्कीस वर्ष का समय गुज़रा है कि मैंने एक विज्ञापन प्रकाशित किया था जिसमें लिखा था कि ख़ुदा ने मुझ से वादा किया है कि मैं चार लड़के दूंगा जो आयु पाएंगे। इसी भविष्यवाणी की ओर 'मवाहि-बुर्रहमान' पृष्ठ-139 में संकेत है अर्थात् उस इबारत में - الحمد للّٰہ الذی وھب لی علی الکبر اربعۃً من البنین و انجز وعدہ من الاحسان अर्थात् अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुति है जिसने वृद्धावस्था में मुझे चार लड़के दिए और अपना वादा पूरा किया (कि मैं चार लड़के दूंगा) अत: वे चार लड़के ये हैं - महमूद अहमद, बशीर अहमद, शरीफ़ अहमद, मुबारक अहमद जो जीवित मौजूद हैं।

42. ब्यालीसवां निशान - यह है कि ख़ुदा ने नफ़िल (अतिरिक्त) के तौर पर पांचवें लड़के का वादा किया था, जैसा कि इसी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' के पृष्ठ-139 में यह भविष्यवााणी इस प्रकार से लिखी है و بشّرنی بخامسٍ فی حین من الاحیان।अर्थात् पांचवां लड़का जो चार के अतिरिक्त बतौर नाफ़िला पैदा होने वाला था ख़ुदा ने उसकी मुझे सूचना दी कि वह किसी समय अवश्य पैदा होगा तथा उसके बारे में एक और इल्हाम भी हुआ जो अख़बार 'अलबद्र' 'अलहकम' में बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है और वह यह है कि انّا نبشّرک بغلامٍ نافلۃً لک نافلۃً من عندی۔ अर्थात् हम तुझे एक और लड़के की शुभसूचना देते हैं कि जो नाफ़िला (अतिरिक्त) होगा अर्थात् लड़के का लड़का। यह नाफ़िला हमारी ओर से है। अत: लगभग तीन माह का समय हुआ है कि मेरे लड़के महमूद अहमद के घर में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम नसीर अहमद रखा गया। यह भविष्यवाणी साढ़े चार वर्ष के पश्चात् पूरी हुई।

43. तेंतालीसवां निशान - यह है कि मैंने अपनी पुस्तक "किश्ती नूह" में यह भविष्यवाणी की थी कि प्लेग के समय में हमें टीका लगवाने की आवश्यकता नहीं होगी। ख़ुदा हमारी और उन सब की जो हमारे घर में हैं स्वयं रक्षा करेगा तथा अपेक्षाकृत कुशलता हमारे साथ रहेगी परन्तु कुछ टीका लगवाने वाले प्राणों की क्षति उठाएंगे। अत: ऐसा ही हुआ। कुछ लोगों ने टीके से से इतनी क्षति उठाई कि उनकी दृष्टि जाती रही तथा कुछ के अन्य अवयवों में विकार आ गया और सर्वाधिक यह कि मल्कोवाल ज़िला गुजरात में एक ही बार में उन्नीस लोग टीका लगवाने से मर गए।

44. चवालीसवां निशान - यह है कि सरदार नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रईस मालेरकोटला का पुत्र अब्दुर्रहमान खान तीव्र टायफायड के रोग से रोगग्रस्त हो गया था तथा बचने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था जैसा कि वह मृतक के रूप में था। उस समय मैंने उसके लिए दुआ की तो ज्ञात हुआ कि प्रारब्ध अटल के समान है। तब मैंने ख़ुदा के समक्ष विनती की कि हे मेरे उपास्य ! मैं इसके लिए सिफ़ारिश करता हूं। इसके उत्तर में ख़ुदा तआला ने कहा من ذا الذی یشفع عندہ الّا باذنہٖ अर्थात् किस में शक्ति है कि ख़ुदा की आज्ञा के बिना किसी की सिफ़ारिश कर सके। तब मैं खामोश हो गया। इस के बाद बिना देरी के यह इल्हाम हुआ انک انت المجاز। अर्थात् तुझे सिफ़ारिश करने की अनुमति दी गई। तब मैंने बड़े विनय एवं गिड़गिड़ाकर दुआ की तो ख़ुदा तआला ने मेरी दुआ स्वीकार की और लड़का जैसे क़ब्र में से निकल कर बाहर आ गया तथा स्वस्थ होने के लक्षण प्रकट हुए। वह इतना दुर्बल हो गया था कि एक लम्बे समय के पश्चात् वह अपनी पूर्व अवस्था पर आया तथा स्वस्थ हो गया और जीवित मौजूद है।

45. पैंतालीसवां निशान - यह है कि मेरे प्रिय मित्र मौलवी नूरदीन साहिब के एक लड़के का निधन हो गया था और वही एकमात्र लड़का था। उसके निधन पर कुछ नादान शत्रुओं ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। इस विचार से कि मौलवी साहिब निर्वंश रह गए। तब मैंने उनके लिए बहुत दुआ की। दुआ के पश्चात् ख़ुदा तआला की ओर से मुझे यह सूचना मिली कि तुम्हारी दुआ से एक लड़का पैदा होगा तथा इस बात का निशान कि वह केवल दुआ के द्वारा पैदा किया गया है यह बताया गया कि उसके शरीर पर बहुत से फोड़े निकल आएंगे। अत: वह लड़का पैदा हुआ जिसक नाम अब्दुल हयी रखा गया। उसके शरीर पर बहुत से असाधारण फोड़े निकले जिन के दाग़ अब तक मौजूद हैं। ये फोड़ों का निशान लड़के के जनम से पूर्व विज्ञापन द्वारा प्रकाशित किया गया था।

46. छियालीसवां निशान - यह है कि उस युग में जबकि पंजाब के समस्त ज़िलों में एक स्थान के अतिरिक्त प्लेग का नामो निशान न था। ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि समस्त पंजाब में प्लेग फैल जाएगी तथा प्रत्येक स्थान प्लेग से ग्रस्त हो जाएगा तथा बहुत मौतें होंगी और हज़ारों लोग प्लेग का शिकार हो जाएंगे और कई गांव निर्जन हो जाएंगे। मुझे दिखाया गया कि प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक ज़िले में

शेष पृष्ठ 12 पर

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना

(पवित्र उपदेश और ईमान वर्धक घटनाएं) (भाग-3)

वित्तीय कुरबानी के कुछ ईमान वर्धक नमूने

इंसान को अल्लाह तआला ने कुछ इस तरह से बनाया है कि कभी वह खुदाई फरमान को सुनकर ऐसा प्रभावित होता है कि एकाएक इस की अवस्था बदल जाती है? हज़रत उमर के बारे में आता है कि "काना वाकेफ़न इन्दल कुर्आन" कि वह कुरआन की आयतें सुनकर तुरंत आज्ञा मानते हुए रुक जाया करते थे। हज़रत अबु बकर के मुहं से आयत وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُل । (आले इमरान 145) सुन कर हज़रत उम्र पर क्या गुज़री? खींची हुई तलवार हाथ से गिर गई और खड़ा होना करना मुश्किल हो गया। कभी ऐसा होता कि नबी का आदेश कान में पड़ता है, और जीवन में एक महान क्रांति पैदा हो जाती है। गली में सड़क पर चलने वाले सहाबी के कान में अल्लाह तआला के रसूल की आवाज़ पड़ी के बैठ जाओ वह सीधा सम्बोधित भी नहीं थे लेकिन वहीं सड़क पर बैठ गए थे । शराब का दौर चल रहा था, घोषणा हुई की कि शराब आज से हराम कर दी गई है। शराब के नशे के बावजूद एक सहाबी उठे और लाठी से शराब के मटके चकनाचूर कर दिए। वास्तव में नेकी के हर क्षेत्र में आज्ञाकारिता का यही स्थान हर मोमिन को प्राप्त करना चाहिए। इसी उद्देश्य से तरबिययी तकरीरों में कुरआन की आयतें और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों को वर्णन किया जाता है कि इनकी बरकतों से मोमिनों के दिलों में एक पवित्र परिवर्तन और तहरीक पैदा हो ... और कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति व्यावहारिक उदाहरण से बहुत प्रभावित होता है और नेक प्रभाव को स्वीकार करता है।

इंसान अपनी फितरत में नमूना का मोहताज है और दूसरों के नेक नमूने उसके दिल में भी नेकी की तमन्ना पैदा करते हैं और इसे भी इसी रंग में रंगीन होने पर तैय्यार करते हैं। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह आदमी वास्तव में बहुत सौभाग्यवान है कि जो दूसरों के नेक नमूनों से नसीहत पकड़ता है। इस हिक्मत वाले सिद्धांत की रौशनी में, आर्थिक कुरबानियों के कुछ नमूने आप की सेवा में प्रस्तुत करता हूं। इस उम्मीद और दुआ के साथ

" शायद कि उतर जाए किसी दिल में मरी बात "

पहली सदी के उदाहरण:

चलो शुरुआत करते हैं सहाबा रिज़वानुल्लाह तआला के उदाहरणों से जिन्होंने नूरे मोहम्मद को अपनी आँखों से देखने की सआदत पाई, आप की सुहबत फ़ैज़ पाया और वास्तव में आप की हिदायत को अपने जीवन में कुछ इस तरह ग्रहण कर लिया कि वह सब के सब हिदायत के आसमान पर सितारों की तरह जगमगाते दिखाई देते हैं। यही हैं वे भाग्यशाली सहाबा जिनसे ख़ुदा प्रसन्न हुआ और वह ख़ुदा से राज़ी हुए और जिनके नमूने को रसूल पाक (स.अ.व.) ने हमेशा के लिए अनुकरणीय बताया।

अल्लाह तआला की राह में खर्च करने के उदाहरण से इस्लाम का इतिहास भरा हुआ है। सहाबा ने जिस तरह से इस इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण किया वह संसार के इतिहास में अद्वितीय है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक युद्ध के अवसर पर आधा माल प्रस्तुत कर दिया और सोचा कि मैं इस क्षेत्र में सभी से आगे बढ़ गया हूं। थोड़ी देर में अबू बक्र आए और अपना सारा माल के प्यारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरणों में ढेर कर दिया ।

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना और आगे बढ़ने की यह आदतें सहाबा ने अपने और हमारे प्यारे आक़ा, सारी दुनिया का उस्ताद, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीख़ीं। आपने ही इन के दिलों को आध्यात्मिक पवित्रता प्रदान की और फिर इन दिलों को ख़ुदा की राह में अपने मालों को नि:सन्कोच कुरबान करने का बीज बोया। जब यह बीज फल लाता और अल्लाह तआला की राह में खर्च करने का कोई प्रदर्शन आप के सामने होता तो आपका चेहरा आनन्द के साथ चमक उठता। एक किसान की तरह, जो अपनी हरी भरी और लहलहाती हुई खेती को देख कर ख़ुशी से झूम उठता है। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूं।

हज़रत जरीर रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक गरीब क़ौम के लोग उपस्थित हुए जो नंगे पांव और नंगे बदन थे। उनकी हालत देखकर रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा बदल गया और आप ने सहाबा को इकट्ठा करके संबोधन किया और उनके लिए सदका की तहरीक फ़रमाई। सहाबा ने दिनार, दिरहम, कपड़े, जौ और खजूर सदका किया यहाँ तक कि कपड़ों और ख़ुराक के दो ढेर जमा हो गए। हज़रत जरीर कहते हैं, मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा सोने की डली की तरह चमक रहा था,

(सही मुस्लिम किताबुज़्ज़कात)

जब कुरआन की यह आयत नाज़िल हुई कि لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ

(सूरे आले इमरान आयत 93) " कि तुम हरगिज़ नेकी को न पा सकोगे जब तक तुम इन चीज़ों में से खर्च न करोगे जिन से तुम प्यार करते हो "

तो इस के बाद वफ़ादार सहाबा का आचरण देखने से संबंध रखता था। यूं लगता था कि वह अपनी हर प्यारी चीज़ को राहे ख़ुदा में क़ुर्बान करने का निर्णय कर चुके हैं। मदीना के अंसार में सब से अधिक बाग़ हज़रत तलहा के पास थे। बिरहाहा नामक एक बाग़ आपको सब से अधिक प्रिय बाग़ था। यह मस्जिद नबवी के सामने था और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्राय वहां जाया करते थे। इस बाग़ का ठण्डा और मीठा पानी आप को बहुत पसन्द था। जब यह आयत उतरी तो हज़रत तलहा ने शीघ्र ही यह बाग़ अल्लाह के राह में सदका कर दिया।

हज़रत इब्न उमर ने फरमाया, " कि जब यह आयत उतरी तो मैंने ग़ौर किया कि मेरी संपत्ति में सबसे पसंदीदा चीज़ क्या है। मैंने अपनी रूमी दासी से अधिक कुछ प्रिय नहीं पाई । इस पर मैंने उसी समय,उस दासी को आज़ाद कर दिया कर दिया।

(हिलयतुल औलिया , खंड 1, पृष्ठ 2 9 5)

अब्दुल्ला बिन उमर की घटना भी एक अजीब ईमान वर्धक घटना है और उनकी सच्ची भावनाओं को प्रतिबिंबित करती है। एक बार जब आप बीमार थे और मछली खाने को बहुत दिल चाहा, तो लोगों ने बहतु मुश्किल से एक मछली पकड़ी। पका कर उनके सामने रखी। अभी एक कौर भी न खाया था कि दरवाज़ा पर एक फकीर ने आवाज़ दी। आप ने फौरन सारी मछली उठाई और उसे दे दी। लोगों ने ज़ोर देकर कहा कि आप मछली खा लें। इस ग़रीब को हम पैसे देते हैं, जिनसे वह अपनी जरूरतों को पूरा कर ले लेकिन इब्ने उमर ने कहा कि इस समय, यही मछली मेरे लिए सबसे पसंदीदा और अच्छी है, और मैं इसे सदका करता हूं

(हिलयतुल औलिया , खंड 1, पृष्ठ 2 9 7)

हज़रत सलमान फारसी मदायन के गवर्नर था और उन्हें बैतुल माल से पांच हज़ार दिनार मिलते थे आपका यह तरीका था कि रकम मिलते ही सारी की सारी राहे ख़ुदा में बांट देते थे और अपना गुज़ारा चटाइयां बुल कर किया करते थे।

(अल-इस्तेआब 2 पृष्ठ 572)

हज़रत अब्दुल्ला बिन जुबैर कहते हैं कि मैंने हज़रत आयशा और हज़रत अस्मा से अधिक दानी किसी को नहीं देखा। दोनों का कुरबानी करने का अंदाज़ा अलग था। हज़रत आयशा तो थोड़ा थोड़ा कर के माल जमा करतीं और जब कुछ माल जमा हो जाता तो सारा का सारा अल्लाह की राह में खर्च कर देतीं। लेकिन हज़रत अस्मा की तरीका यह था कि वह तो कोई चीज़ अपने पास रखती ही न थीं।

(अल् अदबुल मुफरिद अध्याय सख़ावत)

एक बार ख़ुदा के रसूल ने औरतों को अल्लाह के मार्ग में कुरबानी करने की नसीहत फरमाई। अभी आप घर वापस नहीं पहुंचे थे कि हज़रत इब्ने मसूद की पत्नी आ गईं और निवेदन किया कि मेरे पास जितने ज़ेवर हैं वे सब के सब ले आई हूं और अल्लाह की राह में प्रस्तुत करती हूं। (सहीह बुख़ारी किताबुज़्ज़कात)

ये कुछ उदाहरण नमूना के रूप में प्रस्तुत हैं। सच्चाई तो यह है कि रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र नज़रें इन सहाबा के वजूदों पर कुछ ऐसा काम कर गई कि वे अपने आप से खोए गए। उन्होंने अल्लाह तआला के मार्ग में फना होने और अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करने के वे उच्च नमूने दिखाए जिनका उदाहरण मिलना असम्भव है।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

कुछ लोग कहते हैं कि हम विनम्रता भी अपनाते हैं, सुलह के लिए हर शर्त को स्वीकार कर लेते हैं लेकिन फिर भी दूसरा पक्ष ज़ुल्म का रवैया अपनाता है। अगर वास्तव में दूसरी पक्ष ऐसा ही है जैसे वे कहते हैं, तो फिर वे अपना मामला ख़ुदा तआला पर छोड़ दें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि वह कटा जाएगा और फिर आगे यह भी फरमाया कि " बदबख़्त है जो ज़िद्द करता है और नहीं क्षमा करता। इसलिए वे लोग जो ज़िद करते हैं उन के लिए बड़ी चेतावनी है।

बैअत के उद्देश्य को पूरा किए बिना अल्लाह तआला राज़ी नहीं हो सकता और अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआला के बन्दों के हक को अदा करना और सुलह और सफाई भी जरूरी है।

मानव जाति से सहानुभूति और सुलह एक ऐसा आचरण है जिस को अपनाने की हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार नसीहत की है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के हवाले से मानव जाति की सहानुभूति, सुलह, उच्च आचरण को प्रकट करने और ख़ुदा तआला की ख़ुशी को प्राथमिकता देने इत्यादि मामलों के बारे में बहुत प्रमुख नसीहतें।

अल्लाह तआला हमें शक्ति प्रदान करे कि हम आप की शिक्षाओं का पालन करते हुए मानव जाति के साथ सहानुभूति करने वाले हों। सुलह की बुनियाद डालने वाले हों। तौहीद की वास्तविक समझ रखने वाले हों और मैं समाज में मुहब्बत और प्यार बिखेरने करने हों। सांसारिक इच्छाओं को कभी अपने ऊपर हावी न होने दें बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशी की तलाश में हम हमेशा रहें और यह हमारी पहली प्राथमिकता हो।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 अगस्त 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब किश्ती नूह में फरमाते हैं:

"ख़ुदा चाहता है कि तुम्हारी हस्ती पर पूरा पूरा परिवर्तन आए और वह तुम से एक मौत मांगता है जिसके बाद वह तुम्हें जीवित करेगा। " कहा " तुम आपस में जल्द सुलह करो और अपने भाइयों के गुनाह बखशो क्योंकि दुष्ट है वह व्यक्ति जो अपने भाई के साथ सुलह पर राज़ी नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह फूट डालता है।" फरमाया, "तुम अपनी नफ्सानियत को प्रत्येक पहलू से छोड़ दो और आपसी नाराज़गी जाने दो और सच्चे होकर झूठे की तरह विनम्रता धारण करो ताकि तुम क्षमा किए जाओ। फरमाते हैं "नफ्स के धोखे छोड़ दो कि जिस दरवाज़े के लिए तुम बुलाए गए हो उस में से एक धोखा देने वाला इंसान दाख़िल नहीं हो सकता। तुम में से अधिक बुज़र्ग वही है जो अपने भाई के गुनाहों को अधिक क्षमा करता है।

"(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन 19, पृष्ठ 12-13)

यह अंश विभिन्न भाषणों में, दर्सों में अक्सर जमाअत के लोगों के सामने पेश किया जाता है और सच्चे होकर झूठे की तरह विनम्रता अपनाने का वाक्यांश तो ऐसा है जो अक्सर अहमदी अधिकतर समय में बतौर हवाला देते हैं बल्कि आपस के मामलों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हुए मुझे भी लिखते हैं कि हमने ऐसा रवैया धारण किया है, लेकिन दूसरा पक्ष अब भी हमारे सामने ज़ुल्म का व्यवहार अपनाए हुए है

पिछले ख़ुत्बा में मैंने क़ज़ा और विवादों के मुकद्मों के बारे में बात की थी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये शब्द जिन्हें आप ने अपनी शिक्षा में शामिल किया है यह आपकी अपने मानने वालों से उम्मीदें और उनके लिए अपने दिल के दर्द को व्यक्त करता है। इंसान जब कश्ती नूह में शिक्षा के पूरे भाग को पढ़ता है तो हिल कर रह जाता है और जैसा कि मैंने कहा कि ये कुछ शब्द भी बार बार हमारे सामने लाए जाते हैं, लेकिन फिर भी हम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो माफ करने और सुलह के बढ़े हुए हाथ को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। जैसा कि मैंने अभी बताया है कि कुछ लोग कहते हैं कि हम विनम्रता भी अपनाते हैं, सुलह के लिए हर शर्त को स्वीकार कर लेते हैं लेकिन फिर भी दूसरा पक्ष ज़ुल्म का रवैया अपनाता है। अगर वास्तव में दूसरा पक्ष ऐसा ही है जैसे वे कहते हैं, तो फिर वे अपना मामला ख़ुदा तआला पर छोड़ दें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि वह काटा जाएगा और फिर आगे यह भी फरमाया कि " बदबख़्त है जो ज़िद्द करता है और नहीं क्षमा करता। " (कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन, जिल्द 19, पृष्ठ 13)

इसलिए वे लोग जो ज़िद करते हैं उन के लिए बड़ी चेतावनी है। उन्हें होश करना चाहिए एक ओर, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हम यह अहद करते हैं कि हम फसाद नहीं करेंगे। नफसानी जोशों से बचेंगे और दूसरी तरफ, सुलह से भी बचते हैं। तो फिर यह बैअत के अहद से दूरी है। बैअत के अहद को निभाना नहीं है।

आप अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाय कि "हमारी जमाअत को ऐसा होना चाहिए कि केवल शब्दाडंबर पर न रहे।" शब्दों से ही अपने आप को अहमदी न साबित करते रहें। फरमाया कि "बल्कि बैअत की सच्ची इच्छा को पूरा करने वाली हो।" आपने फरमाया " आंतरिक परिवर्तन करनी चाहिए।" केवल मसलों से तुम अल्लाह तआला को ख़ुश नहीं कर सकते।" आप फरमाते हैं कि," यदि कोई आंतरिक परिवर्तन नहीं है, तो तुम में और तुम्हारे दूसरों के मध्य में कुछ भी अन्तर नहीं है। "

(मल्फूज़ात, खंड 8, पृष्ठ 188, संस्करण 1 9 85, यूनाइटेड किंगडम)

अत: आप अलैहिस्सलाम ने बड़ा स्पष्ट कह दिया कि बैअत के उद्देश्य को पूरा किए बिना अल्लाह तआला राज़ी नहीं हो सकता और अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआला के बन्दों के हक को अदा करना और सुलह और सफाई भी ज़रूरी है।

आप अपनी स्थिति का नक्शा खींचते हुए और इस बात को व्यक्त करते हुए कि आप में कितनी हौसला और माफ करने की शक्ति है, अपने बारे में फरमाते हैं कि "मैं कसम खाकर कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति जिस ने मुझे हज़ारों बार दज्जाल और कज़्ज़ाब कहा हो और मेरे विरोध में हर तरह की कोशिश की हो और वह सुलह का इच्छुक हो तो मेरे दिल में यह विचार नहीं आता और नहीं आ सकता कि उसने मुझे क्या कहा था और मेरे साथ क्या सलूक किया था।" फिर आपने हमें सलाह दी," मेरी नसीहत यही है कि दो चीज़ों को याद रखो। एक ख़ुदा तआला से डरो दूसरे अपने भाइयों से ऐसी सहानुभूति करो जैसे स्वयं अपने आप से करते हो।

" जो अपने लिए चाहते हो या इच्छा है कि तुम्हारे साथ दूसरों की सहानुभूति हो, वही व्यवहार अपने भाइयों से भी रखो। फरमाया कि, "यदि किसी से कोई अपराध और त्रुटि हो जाए, तो उसे माफ कर देना चाहिए, न यह कि उस पर अधिक ज़ोर देना और यातना की आदत बना ली जाए । "

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 74, संस्करण 1985, यू.के)

इसलिए हमें हर समय यह बात सामने रखनी चाहिए कि आजकल की दुनिया में जहां हर समय और हर जगह बुराईयों की हालत छाई हुई है हम जो अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर एक सुरक्षा में आया हुआ समझते हैं और इस बात पर धन्यवाद करते हैं कि अल्लाह तआला ने हमें दुनिया के सामान्य उपद्रवों की स्थिति से सुरक्षित रखा है, वास्तव में हम उस समय सुरक्षित हो सकते हैं जब हर समय हम यह भावना रखें कि अपने वैध मामलों में भी दूसरों से मामले पड़ने पर नर्मी का रवैया रखना है और शांति की बुनियाद डालनी है। अन्यथा हमारी बातें केवल बातों तक सीमति रहेंगी और हमारा दावा केवल दावा की हद तक ही है कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हो कर कोई फायदा हुआ है। यह हमारा दावा तो हो सकता है लेकिन वास्तविकता नहीं है लाभ एक ही समय पर होगा, जब उच्च नैतिकता का हर आचरण हम में अपनी चमक दिखा रहा होगा। मानवजाति से सहानुभूति और सुलह एक ऐसा आचरण है जिस को अपनाने की हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार नसीहत की है। इसलिए प्रत्येक अहमदी को इस पर बहुत ध्यान देना चाहिए। आपके और अन्य उद्धरण भी हैं आप की पुस्तकों में, आप के मल्फ़ूज़ात में आप ने बार-बार इसका उल्लेख किया है।

हदीस में आता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "ताकत वाला पहलवान वह आदमी नहीं जो दूसरे को पछाड़ दे। वास्तविक पहलवान वह है जो ग़ुस्सा के समय अपने आप पर काबू रखता है।"

(सही अल्बख़ारी, किताबुल अदब, हदीस 6114)

अत: यह एक मोमिन की शान है कि इस तरह की उच्च नैतिकता का प्रदर्शन करे। क्रोध की स्थिति में अपने ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए। कभी कोई भी काफिर इस बात पर कंट्रोल नहीं कर सकता, लेकिन उसके लिए आश्चर्य की बात है हज़रत अली (रज़ि अल्लाह) की घटना आती है। जब आप ने दुश्मन को पछाड़ लिया। उस पर बैठ गए और उसे मारने के करीब था। उस ने आप के चेहरे पर थूक दिया और आप अलग हो गए। उस ने कहा कि ऐसी स्थिति में तुम ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तो आपने फ़रमाया कि इसलिए कि पहले मैं तुम्हें इस्लाम के दुश्मन होने के कारण मारने लगा था। अब तुम ने मेरे मुंह पर थूक दिया तो मेरी ज़ात इसमें शामिल हो गया और अपने स्वयं के लिए किसी को मारना नहीं चाहता। अत: यह उच्च मानक हैं जो हमें इतिहास में नज़र आते हैं जो हमारे बुज़ुर्गों ने प्रस्तुत किए हैं।

(उद्धरित अल्फ़ख़री उसूल रियासत और तारीख़ मलूक, लेखक मुहम्मद अली इब्ने अली, अनुवादक मौलाना मुहम्मद जाफर शाह फलवारवी पृष्ठ 68, मुद्रित इदारा सक़ाफत इस्लामिया लाहौर 2007)

अत: मोमिन की तो यह शान है कि ग़ुस्सा को दबाए और सुलह की तरफ झुके लेकिन काफ़िर कभी यह नहीं सोच सकता। और यही वह मोमिनाना शान है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम में पैदा करना चाहते हैं ताकि हमारे कर्म से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा व्यक्त हो। उस वास्तविक शिक्षा का प्रकटन हो जो क्षमा, माफी और शांति फैलाने वाली शिक्षा है।

इसलिए एक मौका पर अपनी एक सभा में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं जो इसी हदीस की व्याख्या भी है कि " हमारी जमाअत में दबंग और पहलवानों की शक्ति रखने वालों की आवश्यकता नहीं।" हमें वे नहीं चाहिए जो बहुत मज़बूत और ताकतवर पहलवान हों फरमाया कि, " बल्कि ऐसे लोग चाहिए जो आचरण को बदलने की कोशिश करने में सक्षम हों।" अपने आचरण को बदलने वाले और इसे उच्च मानकों तक ले जाने वाले हों। फरमाया, "यह एक तथ्य है कि वह एक शक्तिशाली नहीं है जो पहाड़ को जगह से हटाने में सक्षम है। नहीं, नहीं " फरमाया, "असली बहादुर वही है जो आचरण को बदलने पर सामर्थ्य पाए। " जो अपने आप पर नियंत्रण रखता हो और नैतिकता को उच्च बनाने की शक्ति रखता हो। फरमाया कि, "इसलिए याद रखें कि शक्ति हिम्मत और साहस आचरण को बदलने में लगाओ। क्योंकि यही वास्तविक शक्ति और दिलेरी है"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 140, संस्करण 1985, यू.के)

इसलिए यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

फिर एक मौका में एक मजलिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि: " मैं समझता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर गन्दी आदतों को परित्यक्त कर के अच्छी आदतों को अपना लेता है। " बुरे आचरण को छोड़ता है , बुरी आदतों को छोड़ देता है और अच्छी आदतों और बातों को प्राप्त करने की कोशिश करता है फरमाया "इसके लिए वही करामत (चमत्कार) है। " यह परिवर्तन होना, उच्च नैतिकता प्राप्त करना उसके लिए एक चमत्कार है और एक करामत है। लोग कहते हैं कि क्या करामत हुई? बैअत में आकर क्या करामत दिखाई तो बैअत में आकर करामत यही है कि उच्च आचरण अपना लिए और बुरी बातों को छोड़ दिया। फरमाया कि" जैसे बहुत ही सख्त मिज़ाज और ग़ुस्सा वाला इन बुरी आदतों को छोड़ता है और दया और नरमी धारण करता है या कंजूसी को छोड़ कर उदारता और ईर्ष्या के बजाय सहानुभूति हासिल करता है तो यह वास्तव में करामत है। " बुराइयां छोड़ीं अच्छे आचरण धारण किए। गुस्सा को छोड़ दिया और क्षमा और सहानुभूति की आदत डाली कंजूसी को छोड़ा और उदारता को धारण किया। ईर्ष्या के बजाय दूसरों से सहानुभूति की भावना रखी तो फरमाते हैं कि यह एक करामत है अत: तुम में से कौन है जो नहीं चाहता कि एक करामती बन जाए फरमाया, "मुझे पता है कि हर कोई यह चाहता है, अत: यह चिरस्थायी और जीवित करामत है।" अगर सदा रहने वाली कोई करामत है तो यही करामत है। यही चमत्कार है और यही इंकलाब है जो तुम्हें अपने अंदर पैदा करना चाहिए कि बुराइयों को छोड़ कर उच्च नैतिकता को धारण करो। फरमाया, "मनुष्य नैतिक स्थिति को ठीक करे, क्योंकि यह एक ऐसी करामत है जिस का प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता, बल्कि लाभ दूर तक पहुंचता है। मोमिन को चाहिए कि सृष्टा और सृष्टि के निकट करामत वाला बन जाए। "अल्लाह तआला के निकट भी करामत वाला बन जाओ। सृष्टि के निकट भी करामत वाले बन जाओ। अल्लाह तआला के हक भी अदा करने वाले हों। फरमाते हैं कि। "बहुत से शराबी और अय्याश ऐसे देखें गए हैं जो किसी आदत से हट कर निशान को मानने वाले नहीं, लेकिन नैतिक स्थिति को देखते हुए उन्होंने भी सिर को भी झुका लिया।" मान गए। बड़े बड़े अपराधी, बड़े बड़े मुजरिम बड़े बड़े अय्याश थे। निशानों को देख कर तो उन की अवस्था नहीं बदली परन्तु चरित्र की हालत को देख कर उन्होंने सिर को झुका लिया। मान गए। "और कबूल करने और स्वीकार करने के अतिरक्ति ओर कोई मार्ग न बचा।" फरमाते हैं "कई लोगों की जीवन में इस बात को पाओगे कि उन्होंने चरित्र की करामत को देख कर ही सच्चे धर्म को स्वीकार किया।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 141 से 142, संस्करण 1985 ई यू, के)

जब आप यह बात बयान कर रहे थे उस समय आप की हस्ती से इसकी एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी हो गई। इससे पहले भी, मैंने इस घटना का वर्णन किया है कि उस समय दो सिख आए और मज्लिस में बैठे और बेकार की बातें शुरू कर दीं। बकवास शुरू कर दी और आप की मज्लिस में बैठे बोलते रहे। आप ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप सुनते रहे। उस समय सभी लोगों की ये भावनाएं थे कि उच्च नैतिकता के व्यावहारिक अभिव्यक्ति कैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाई। यद्यपि आपका स्थान था, आपकी मज्लिस थी, अहमदी लोग थे लेकिन आप ने किसी को अनुमति नहीं दी कि उन्हें कुछ कहे और जो उनके मुंह में आया, जो गालियां बक सकते थे बकीं, बोले और चले गए। या फिर बाद में पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात, भाग1, पृष्ठ 142, संस्करण 1 9 85, यू. के)

तो यह वह उच्चतम गुणवत्ता थी जिसे आपने अपना नमूना भी अपने प्रियजनों के सामने प्रस्तुत किया था। इस बात को वर्णन फरमाते हुए कि अगर व्यक्ति के अंदर से नफसानियत का कीड़ा नहीं निकलता तो इस का तौहीद पर भी ईमान नहीं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

" मूल बात यह है कि अल्लाह तआला के फज़ल के अलावा यह कीड़े अंदर से नहीं निकल सकते।" यानी नफसानियत के कीड़े। अत: अल्लाह तआला से ही फज़ल प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। फरमाते हैं कि "यह एक बहुत ही बारीक कीड़े हैं और सबसे अधिक हानि और नुकसान इनका ही है। जो लोग नफसानी भावनाओं से प्रभावित होकर अल्लाह तआला के अधिकारों और सीमाओं से बाहर हो जाते हैं और इस तरह से अल्लाह तआला के अधिकारों को भी नष्ट करते हैं वे ऐसे नहीं कि पढ़े लिखे नहीं बल्कि उनमें हज़ारों मौलवी फ़ाज़िल और आलिम पाओगे। और बहुत होंगे जो फकीह और सूफी कहलाते होंगे। परन्तु इन बातों के बावजूद वे भी इन बीमारियों से ग्रस्त होंगे।" यह सिर्फ जाहिलों का काम नहीं है कि

वे अल्लाह का हक और बन्दों के अधिकार अदा नहीं करते हैं या अवसर आए तो लोगों के हक मारने की कोशिश करते हैं, बल्कि आप ने फरमाया कि बहुत सारे पढ़े लिखे लोग ऐसे हैं बल्कि उलेमा और विद्वान लोगों में और इस से भी बढ़ कर जो धर्म का ज्ञान रखने वाले हैं और आम दुनिया में वे बड़े फकीह और बड़े सूफी कहलाते हैं, बुज़ुर्ग कहलाते हैं वे भी इस रोग से पीड़ित हैं कि जब अपना अवसर आता है तो सब कुछ सबकुछ भूल जाते हैं, और न फिर उनको ख़ुदा याद रहता है, न बन्दों के हक याद रहते हैं। फरमाया " इन बुतों से बचना ही तो बहादुरी है और उन्हें पहचानना ही कमाल ज्ञान और बुद्धि है। यही बुत हैं जिन के कारण से आपस में असहमति पैदा होती है और हज़ारों ख़ून हो जाते हैं। एक भाई दूसरे का हक मारता है और इसी प्रकार हज़ारों हज़ार बुराइयां उनके द्वारा पैदा होती है।" फरमाते हैं," हर दिन और हर क्षण, और माध्यमों पर इतना भरोसा किया गया है कि ख़ुदा तआला को केवल एक बेकार समझ लिया गया है। बहुत ही कम लोग हैं जिन्होंने एकेश्वरवाद के मूल अर्थ को समझा है और अगर उन्हें कहा जाए तो झट कह देते हैं कि क्या हम मुसलमान नहीं और कलमा नहीं पढ़ते? लेकिन अफसोस तो यह है, उन्होंने केवल इतना ही समझ लिया है कि कलमा मुंह से पढ़ दिया और यह पर्याप्त है।" जो असल उद्देश्य है, तौहीद का वह नहीं समझे। समझ लिया कि लाइलाह इल्लल्लाह पढ़ दिया और काफी हो गया।

आप फरमाते हैं कि "मैं बेशक कहता हूँ कि अगर इंसान कलमा-ए-तैयबा की वास्तविकता से परिचित हो जाए और व्यावहारिक रूप से इस के लिए प्रतिबद्ध हो जाए तो वह बहुत बड़ी तरक्की कर सकता है और ख़ुदा तआला की अजीब दर अजीब कदरतों को देख सकता है।" फरमाते हैं कि " इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लो कि मैं जो इस स्थान पर खड़ा हूं मैं साधारण वाइज़ (प्रवचन सुनाने वाला) के रूप में इस स्थिति में नहीं खड़ा हूं, और किसी कहानी को सुनाने के लिए नहीं खड़ा हूं बल्कि मैं तो गवाही के अदा करने के लिए खड़ा हूं। मैंने वह संदेश जो अल्लाह तआला ने मुझे दिया है पहुंचा देना है।" फरमाया, "इस बात की मुझे कोई परवाह नहीं है कि कोई इसे सुनता है या नहीं सुनता और सहमत है या नहीं, इस का उत्तर तुम ख़ुद दोगे। मैंने फर्ज़ अदा करना है मैं जानता हूं कि बहुत से लोग मेरी जमाअत में दाख़िल तो हैं और तौहीद को स्वीकार भी करते हैं परन्तु मैं अफसोस से कहता हूं कि वे मानते नहीं। जो आदमी अपने भाई का हक मारता है या धोखा देता है या अन्य प्रकार की बुराइयों से दूर नहीं करता, मैं विश्वास नहीं करता कि वह तौहीद पर विश्वास करने वाला है।" फरमाते हैं कि " ख़ुदा को अकेला मानने के साथ अनिवार्य है कि उसकी सृष्टि के अधिकार को नष्ट न होने दें। जो व्यक्ति अपने भाई का हक मारता है और उससे विश्वासघात करता है वह लाइलाहा इल्लल्लाह को मानने वाला नहीं।" लाइलाहा इल्लल्लाह को मानने वाला या एकेश्वरवाद को मानने वाला फिर बन्दों के अधिकार नहीं छीना करता। फरमाया "क्योंकि यह एक नेअमत है कि इसे पाते ही व्यक्ति में एक आदत से हट कर परिवर्तन हो जाता है। "अगर ला इलाह इल्लल्लाह का अर्थ समझ लो तो एक असामान्य परिवर्तन तुम्हारे अंदर पैदा हो जाए। फरमाया कि "इसमें द्वेष, वैर, ईर्ष्या, दिखावा आदि के बुत नहीं रहते और ख़ुदा तआला से उसकी निकटता होती है। यह परिवर्तन तभी होता है और तभी वह सच्चा मोहिद(तौहीद को मानने वाला) बनता है जब यह आंतरिक बुत, अहंकार, धोखा , दिखावा, वैर, ईर्ष्या और कंजूसी, पाखंड और अहद तोड़ना आदि से दूर हो जाएं। " वास्तविक मोहिद बनना है तो फिर अहंकार भी छोड़ना होगा। बनावट और धोखा को भी छोड़ना होगा। वैर और ईर्ष्या को भी छोड़ना होगा। कोई सुलह के लिए आता है, अगर वह माफी मांगता है तो उस को माफ भी करना होगा। दिलों में वैर नहीं पालना चाहिए। शत्रुता नहीं रखनी चाहिए। ईर्ष्या और कंजूसी को भी छोड़ना होगा। कपट और वादा तोड़ने को भी छोड़ना हो। ये सारी बातें छोड़ देंगे तो आपने फ़रमाया कि फिर ही सच्चे मोहिद बन सकते हो। तभी ला इलाह इलल्लाह के अर्थ को समझ सकते हो। आप फरमाते हैं कि "जब तक यह बुत अंदर ही हैं उस समय तक ला इलाह इल्लल्लाह कहने में कैसे सच्चा ठहर सकता है? क्योंकि इसमें भरोसा को नकारना उद्देश्य है।" अत: यह पक्की बात है कि केवल मुंह से कह देना कि ख़ुदा को वाहिद ला शरीक मानता हूं कोई लाभ नहीं दे सकता। अभी मुंह से कलमा पढ़ता है, और अभी कोई बात ज़रा स्वभाव के विरुद्ध हो और ग़ुस्सा और क्रोध को ख़ुदा बना लेता है।

(मल्फूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 105 से 107, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अत: सारांश यह कि इंसान के अंदर से नफ्सानियत का कीड़ा अल्लाह तआला की कृपा के बिना नहीं निकल सकता और अल्लाह तआला की कृपा बिना वास्तविक तौहीद (एकता) पर स्थापित हुए नहीं मिल सकती। केवल ला इलाह इल्लल्लाह मुंह से कह देने से कोई मौहिद नहीं बन सकता। मौहिद बनने के लिए अल्लाह तआला को सब ताकतों को मालिक समझना ज़रूरी है और उस को वास्तविक उपास्य समझना ज़रूरी है और अगर अल्लाह तआला को सब ताकतों को मालिक समझा जाए और वास्तविक उपास्य समझा जाए तो फिर दुनिया की चालाकियों से, दुनिया के बहानों से। विभिन्न तरीकों से इंसान दूसरे इंसान का हक नहीं मार सकता। अत: जो अपने भइयों के हक अदा नहीं करता, जो सुलह की तरफ कदम नहीं बढ़ाता।जो दुश्मनियों को ख़त्म नहीं करता वह तौहीद को भी मानने वाला नहीं। यह सारांक्ष है आप के इस उद्धरण का। यह एक ऐसा बिन्दु है कि अगर इसे समझ लिया जाए तो हम सब हमेशा सुलह की नींव डालने वाले बन जाऐं और दूसरों के हक अदा करने वाले बन जाऐं। अत: हम में से प्रत्येक को इस विषय को समझते हुए अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है वरना हमारे लिए यह चिन्ता का विषय है। मुंह से तो तौहीद को मानने वाले हैं परन्तु व्यवहार से इस का इन्कार करने वाले हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक "इस्लामी उसूलों के फिलास्फी" बुराई को छोड़ने का उल्लेख किया है और यह उल्लेख फरमाते हुए एक किस्म आप ने यह वर्णन की है अर्थात कि शिर्क को कैसे छोड़ा जा सकता है किस प्रकार छोड़ा जाता है और विभिन्न तरीकों में से एक यह है कि

"दूसरे को अत्याचार के रास्ते से शारीरिक कष्ट न पहुंचाना बुराई रहित होना और सुलह से जीवन व्यतीत करना।" एक किस्म बुराई की यह है बिलकुल इस प्रकार का जीवन व्यतीत करना के किसी भी प्रकार का अत्याचार किसी पर न करना। किसी को नुकसान न पहुंचाना बल्कि विशेष रूप से बुराई रहित हो जाना। और शांति को स्थापित करना, शांति से जीवन व्यतीत करना। आपस में मुहब्बत और प्रेम को विकसित करना महत्त्वपूर्ण है आप इस बारे में और अधिक फरमाते हैं "वास्तव में, सुलह करना श्रेष्ठ स्तर का आचरण है और मानवता के लिए बहुत आवश्यक है और इस आचरण के यथा उचित गुण जो बच्चे में होता है जिस के मिलने से यह आचरण बनता है उल्फत यानी मुहब्बत है।" फ़रमाते हैं। " यह तो स्पष्ट है कि इंसान केवल प्रकृतिक आदत में अर्थात इस अवस्था में के इंसान अक्ल से वंचित हो सुलह के विषय को नहीं समझ सकता और न जंग के विषय को समझ सकता है। ये गुण जो है यह बच्चों में पैदा होता है, सुलह करना और सुलह की तरफ कदम बढ़ाना फितरत का हिस्सा है। बच्चे जो है शीघ्र भूल जाते हैं और सुलह की तरफ कदम बढ़ाते हैं आप फरमाते हैं कि इंसान इस प्रकृतकि अवस्था को उसी समय समझ सकता है जब अक्ल भी हो अगर अक्ल नहीं तो इंसान सुलह के विषय को अच्छी तरह से समझ नहीं सकता और इसी प्रकार न जंग के विषय को समझ सकता है किस समय सुलह करनी और किस समय जंग है। फरमाते हैं कि" अत: उस समय जो एक आदत मुवाफकत की उस में पाई जाती है वह सुलह करने की आदत की एक जड़ है लेकिन वह चूंकि अक्ल और विचार तथा विशेष इरादा से धारण नहीं की जाती इसलिए ख़ुलक में सम्मिलित नहीं होती कि जब इंसान इरादा के बिना अपने आप को बुराई रहित बना कर सुलह करने के गुण को अपने स्थान पर उपयोग करे" अगर इंसान में अक्ल नहीं है या ताकत नहीं है उस समय या बच्चे की अवस्था है तो वह एक उच्च स्तर का गुण नहीं है उच्च स्तर का गुण उसी समय बनेगा तब सारे हालात की समीक्षा करे और फिर इंसान इरादा करे और कोशिश करके फिर सुलह की बुनियाद डाले और उस को अपने स्थान पर प्रयोग करे। या अगर कुछ देशों या मुल्कों में जंग की अवस्था आ जाती है उस समय वे फैसले करते हैं लेकिन इंसाफ से दूर होकर नहीं अक्ल से हट कर नहीं बल्कि स्थान और अवसर के अनुसार और सोच समझ कर फैसले होते हैं। सुलह करने की बुनियाद भी सही स्थान पर हो, सहीह अवसर पर हो तो यह उच्च गुण उसी समय बनता है। फरमाया कि" जब इंसान बिना इरादा अपने आप को बुराई से बचा कर सुलह करने के गुण को अपने स्थान पर धारण करे और ग़लत स्थान पर प्रयोग करने से बचता है। इस में अल्लाह तआला यह शिक्षा देता है وَالصُّلْحُ خَيْرٌ (अन्निसा 129) सुलह बहरहाल बेहतर है وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا (अन्फआल 62) कि अगर वे सुलह के लिए झुक जाएं तो तू भी उन के लिए सुलह के लिए झुक जा। अगर दुश्मन सुलह के लिए झुक जाए या दूसरा पक्ष सुलह के लिए तैय्यार है

तो फिर सुलह करो। وَ اِنۡ جَنَحُوۡا لِلسَّلۡمِ فَاجۡنَحۡ لَهَا (अन्फआल 62) फिर अल्लाह तआला फरमाता हे कि وَ عِبَادُ الرَّحۡمٰنِ الَّذِيۡنَ يَمۡشُوۡنَ عَلَى الۡاَرۡضِ هَوۡنًا (अल्फुरकान 64) कि और रहमान के बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर नर्मी के साथ विनम्रता के साथ चलते हैं। और फिर अल्लाह तआला फरमाता है وَ اِذَا مَرُّوۡا بِاللَّغۡوِ مَرُّوۡا كِرَامًا (अल्फुरकान 73) और जब वे लग़्व के पास से गुज़रते हैं तो संजीदगी से गुज़रते हैं फिर आप ने यह आयत वर्णन की कि اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ فَاِذَا الَّذِىۡ بَيۡنَكَ وَ بَيۡنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيۡمٌ (हा मीम सिज्दा 73)कि ऐसी चीज़ से प्रतिरक्षा कर जो बेहतरीन है। अगर इस प्रकार उत्तम रंग में करोगे तो तब ऐसा आदमी जिस में और तुम्हारे बीच दुश्मनी है मानो कि वह गहरे दोस्त बन जाएंगे।आप फरमाते हैं कि "अर्थात आपस में सुलह धारण करो। सुलह में ख़ैर है जब सुलह के लिए झुकें तो तुम भी झुक जाओ। ख़ुदा के नेक बन्दे सुलह फैलाने के लिए ज़मीन पर चलते हैं और अगर कोई लग़्व बात किसी से सुनें जो जंग की प्रस्तावना और आरम्भ हो तो बच कर चले जाते हैं।"

"अगर व्यर्थ बात सुनते हैं जिसकी वजह से लड़ाई पैदा होने का खतरा हो, लड़ाई होने का खतरा हो तो वह बुज़र्गाना रूप में इससे बचते हुए एक तरफ हो जाते हैं और फरमाया कि " और छोटी छोटी बात पर लड़ना शुरू नहीं कर देते । अर्थात जब तक कोई अधिक परेशानी अशांति के रूप में अच्छी तरह से न पहुंचे उस समय तक हंगामा करने को अच्छा नहीं समझते और सुलह करने के स्थान का यही अवसर है कि छोटी छोटी बातों को ध्यान में न लावें और माफ फरमा दें। और लग़्व का शब्द जो इस आयत में आया है अत: स्पष्ट हो कि अरबी भाषा में लग़्व उस हरकत को कहते हैं कि जैसे एक व्यक्ति शरारत से एसी बकवास करे या निय्यत कर के ऐसा काम उस से हो कि वास्तव में उस से कोई नुकसान और हानि नहीं पहुंचती" मुंह से व्यर्थ बातें कर रहा है या नुकसान पहंचाने का निय्यत हो जिस से कोई हानि भी न हो "अत: सुलह करने का यह लक्षण है कि ऐसे बेहूदा कष्ट को क्षमा करें" अगर कोई हलका सा छोटा मोटा नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है तो उस को क्षमा कर दो छोड़ दो " और बुज़र्गाना सीरत अमल में लाए।" आप फरमाते हैं " और फिर फरमाया कि जो व्यक्ति दुष्टता से कुछ शरारत और गन्दी बातें करे तो तुम नेक तरीके से सुलह करने का उस को जवाब दो इस आदत से दुश्मन भी दोस्त बन जाएगा। "

(उद्धरण इस्लामी उसूल की फिलासफी, रूहानी खज़ायन, जिल्द 10, पृष्ठ 348 से 349)

फिर एक जगह आप फ़रमाते हैं कि: " इस जमाअत को तैयार करने में उद्देश्य यही है कि ज़बान, कान, आंख और प्रत्येक अंग में तक्वा आ जाए। तक्वा का प्रकाश उस के अंदर और बाहर है अच्छे आचरण का एक महान उदाहरण हो। और व्यर्थ ग़स्सा और क्रोध आदि न हों।" आप फरमाते हैं," मैंने देखा है कि जमाअत के अधिकतर लोगों में ग़ुस्सा का दोष अब तक पाया जाता है। थोड़ी थोड़ी सी बात पर द्वेष और वैर पैदा हो जाता है और आपस में लड़ झगड़ पड़ते हैं। इस तरह के लोगों का जमाअत में से कोई हिस्सा नहीं है और मैं समझ नहीं पाता कि इस में क्या कठिनाई है कि अगर कोई और गाली दे और दूसरा चुप रहे और उसका जवाब न दे। प्रत्येक जमाअत का सुधार पहले आचरण के साथ शुरू होता है चाहिए के आरम्भ में धैर्य की मदद से सबर में तरक्की करे। " फरमाया, "सबसे अच्छा तरीका यह है कि अगर कोई बुरी बात कहे, तो इसके लिए दिल के दर्द से दुआ करे, कि अल्लाह तआला इस का सुधार करे और दिल में वैर को हरगिज़ न बढ़ाए।" आप फरमाते हैं कि " जैसे दुनिया के कानून हैं वैसे ख़ुदा का भी नियम है। जब दुनिया अपने कानून को नहीं छोड़ती, तो ख़ुदा तआला अपने कानून को कैसे छोड़े। अत: जब तक परिवर्तन नहीं होगा तब तक तुम्हारा सम्मान उस के निकट कुछ भी नहीं।" फरमाया," ख़ुदा तआला हरगिज़ पसन्द नहीं करता कि धैर्य और सबर और क्षमा जो कि अच्छे गुण हैं उनके स्थान पर दरन्दगी है। यदि तुम इन गुणों में से किसी को विकसित करोगे, तो तुम जल्द ही ख़ुदा तक पहुंच जाओगे।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 127 से 128, संस्करण 1985 मुद्रित यु.के)

अत: हमारा लक्ष्य आप की जमाअत में शामिल होना इसलिए है कि ख़ुदा तआला को प्रसन्न करें और वास्तविक तौहीद को अपने दिलों में स्थापित करें। फिर जैसा कि आपने फ़रमाया इस के लिए नैतिकता को भी धारण करना होगा जो दूसरों के अधिकारों से संबंधित हैं, जो दूसरों के अधिकारों को अदा करने से मिलते हैं।

आपने एक अवसर पर नसीहत करते हुए फरमाया "यदि मुझ से संबंध जोड़ा है और मेरी फौज में प्रवेश करने का दावा है, तो उच्च नैतिकता को अपनाना होगा और फित्ना और फसाद की स्थिति को छोड़ना होगा।" आप ने अपने साथ संबंध रखने वालों को फरमाया कि "वह दिलों को पवित्र करें अपने इंसानी रहम को तरक्की दें और दरदमनदों के हमदर्द बनें, ज़मीन पर सुलह फैला दें कि इससे उनका धर्म फैलेगा। "

(गावर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 17 पृष्ठ 15)

इस्लाम फैलेगा। तब्लीग़ के रास्ते खुलेंगे। आप ने फरमाया कि "अत: उठो और तौब: करो और अपने मालिक को नेक कामों से राज़ी करो।"

(लेकचर लाहौर, रूहानी खज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 174)

फिर एक जगह अपनी जमाअत को अपने दिल से वैर और ईर्ष्या निकालने और मानव जाति से सहानुभूति और सुलह की नींव डालने की नसीहत करते हुए कहते हैं।" मैं इस समय अपनी जमाअत को जो मुझे मसीह मौऊद मानती है विशेष रूप से समझाता हूं कि वे हमेशा उन नापाक आदतों से परहेज़ करें। मुझे ख़ुदा ने मसीह मौऊद करके भेजा है और हज़रत मसीह इब्ने मरियम का लिबास पहना दिया है इसलिए मैं समझाता हूँ कि बुराई से परहेज़ करो और मानव जाति के सहानुभूति करो। अपने दिलों को द्वेषों और ईर्ष्या से पाक करो कि इस आदत से तुम फरिशतों की तरह हो जाओगे। क्या ही गंदा और अशुद्ध वह धर्म है जिस में मानव से सहानुभूति नहीं और क्या ही अशुद्ध वह रास्ता है जो नफसानी द्वेष के कांटों से भरा है। अत: तुम मेरे साथ हो ऐसे मत हो। तुम सोचो कि धर्म से क्या प्राप्त किया। क्या यही कारण है कि लोगों को कष्ट देना तुम्हारी आदत है।" लोगों को दु:ख देना तुम्हारी आदत हो जाए फरमाया, "नहीं, बल्कि धर्म इस जीवन से प्राप्त करने कि लिए है जो ख़ुदा में है। और जीवन न किसी को हासिल हुआ और न ही आगे हुआ सिवाए इस के कि ख़ुदा तआला के गुण मनुष्य में प्रवेश हो जाएं। ख़ुदा के लिए सब पर रहम करो।" वह जीवन प्राप्त करना है, तो वह बिना किसी प्रयास के प्राप्त नहीं होगा और न कोई उच्च नैतिक आचरण अपनाए होगी। फरमाया कि, "ख़ुदा के लिए सब पर रहम करो।" ताकि आसमान से तुम पर रहम हो। दया करो आओ मैं तुम्हें एक ऐसी राह सिखाता हूँ जिस से तुम्हारा नूर सभी नूरों पर विजयी रहे और वह यह है कि तुम सभी दुनियावी हस्दों और वैरों को छोड़ दो और मानव जाति के सहानुभूति करने वाले हो जाओ और ख़ुदा में खो जाओ और उसके साथ उन्नत स्तर की सफाई करो यही वह तरीका है जिस से करामतें प्रकट होती हैं और दुआएं स्वीकार होती हैं, और फरिशते मदद के लिए उतरते हैं, लेकिन यह एक दिन का काम नहीं है। तरक्की करो तरक्की करो उस धोबी से शिक्षा प्राप्त करो जो पहले कपड़ों को भट्ठी में गर्म करता है और किए जाता है, यहां तक कि आग का प्रभाव सारे कपड़ों से उस के मैल और गन्दगी को अलग कर देती है। तब सुबह उठता है और पानी पर पहुंचता और पानी में कपड़ों को गीला करता है और बार बार पत्थरों पर मारता है तब वह मैल जो कपड़ों के अंदर थी और उस का अंग बन गई थी कुछ आग से सदमे उठाकर और कुछ पानी में धोबी के हाथ से मार खाकर अचानक दूर हो जाना शुरू हो जाती है।" कपड़े धोते हुए उन्हें बार-बार मलना पढ़ता हे या धोबी उन को कपड़ों पर मारता है या आज कल वाशिंग मशीनें हैं, जो उन को इतनी तेज़ी से घुमाती हैं कि वह मैल उतर जाती है। यही उदाहरण आप ने दिया है। फरमाया कि "यहां तक कि कपड़े सफेद हो जाते हैं जैसे आरम्भ में थे यही इंसान के नफ्स के सफेद होने का तरीका है " जिस तरह कपड़े धुलते हैं वही तरीका जो है इंसान के नफस के पवित्र होने का है। "और तुम्हारी सारी मुक्ति इसी सफेदी पर आधारित है। यही वह बात है जो कुरआन में ख़ुदा तआला फरमाया कहता है। قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا (अश्शमस 10) अर्थात वह नफ्स मुक्ति पा गया जो तरह तरह के मैलों और रगड़ाई से पवित्र किया गया। "

(गावर्मेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 17, पृष्ठ 14 से 15)

अत: इस प्रकार, अपने नफ्स को धोने की कोशिश करनी चाहिए जिस तरह कपड़े धोने का उदाहरण हमारे सामने है। अल्लाह तआला हमें शक्ति प्रदान करे कि हम आप की शिक्षाओं का पालन करते हुए मानव जाति के साथ सहानुभूति करने वाले हों। सुलह की बुनियाद डालने वाले हों। तौहीद की वास्तविक समझ रखने वाले हों और समाज में मुहब्बत और प्यार बिखेरने करने हों। सांसारिक इच्छाओं को कभी अपने ऊपर हावी न होने दें बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशी की तलाश में हम हमेशा रहें और यह हमारी पहली प्राथमिकता हो।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -10)

☆ ख़लीफा का स्वयं शिलान्यास रखने के लिए आना बड़े सम्मान की बात है। बात सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रही बल्कि ख़लीफा का लोगों के सम्मान का दायरा भी व्यापक था।

☆ ख़लीफतुल मसीह बहुत सोच समझ रखने वाले व्यक्ति लगते हैं और शब्दों का चयन समझदारी से करते हैं। आप में शांति और सुकून अनुभव होता है।

☆ ख़लीफतुल मसीह ने जो शांति और एकता की बातें हैं यह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और अच्छी है। इस तरह से समाज में सुधार उत्पन्न किया जा सकता है

☆ एक ऐसा पम्फेलट बनाएँ जिस पर ख़त्म नबुव्वत का मतलब, सदाकत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दलीलें, चाँद ग्रहण के निशान, ख़िलाफत के महत्त्व आदि के संदर्भ में एक दो वाक्य में बुनियादी ज्ञान प्राप्त हो सके और तब्लीग़ के लिए सदस्य इससे लाभ प्राप्त कर सकें।

मार्गबर्ग में ख़िताब के बाद मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ, मज्लिसे आमला लज्ना इमाउल्लाह जर्मनी से मुलाकाततथा नसीहतें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

19 अप्रैल 2017 (दिन बुधवार) (शेष....)

शिलान्यास रखने का समारोह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब छह बज कर 44 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल ने अज़ीज़ दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ शिलान्यास रखने की जगह पर पधारे और दुआओं के साथ बुनियादी ईंट स्थापित की। इस के बाद हज़रत बेगम साहिबा ने दूसरी ईंट स्थापित फ़रमाई। इसके बाद क्रम से निम्नलिखित जमाअत के उहदेदारों और मेहमानों को एक ईंट रखने का सौभाग्य नसीब हुआ।

आदरणीय अब्दुल्ला वागस हायवज़र साहिब (अमीर जमाअत जर्मनी), डॉक्टर Thomas Spies साहिब, लॉर्ड मेयर शहर मारबर्ग, प्रांतीय सांसद व आयुक्त Mrs Kristen Frundt साहिबा, अब्दुल माजिद ताहिर अतिरिक्त वकीलुल तबशीर लंदन, आदरणीय हैदर अली जफर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी, आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब निजी सचिव, आदरणीय मकसूद अहमद अल्वी साहिब क्षेत्रीय मुअल्लिम, आदरणीय चौधरी इफ्तिखार अहमद साहिब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह, आदरणीय हसनात अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया,आदरणीया अमतुन्नूर अहमद साहिबा सदर लजना इमा अल्लाह जर्मनी, मुहम्मद हम्माद हार्टर साहिब राष्ट्रीय अतिरिक्त सचिव प्रशिक्षण नोम्बायीन, आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद जफर साहिब क्षेत्रीय अमीर, आदरणीय मुहम्मद इलियास साहिब सदर जमाअत मारबर्ग, आदरणीय तारिक लतीफ भट्टी साहिब सचिव प्रशिक्षण मारबर्ग, आदरणीय मुहम्मद मुनव्वर अहमद साहिब ज़ईम अंसारुल्लाह मारबर्ग, आदरणीय यासिर अयाज़ साहिब कायद मजलिस मारबर्ग, आदरणीया सूबिया मुनव्वर साहिबा सदर लजना मारबर्ग, आदरणीय मुबारक साबिर साहिब सदस्य जमाअत मारबर्ग।

इसके अतिरिक्त वाकफह नौ प्रिया माहिरा रज़ा और वक्फे नौ प्रिय एहसानुल्लाह ख़ान को भी एक एक ईंट रखने का सौभाग्य नसीब हुआ। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मार्क में पधारे जहां इस समारोह में शामिल होने वाले सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया। शिलान्यास समारोह और डिनर के यह कार्यक्रम सात बज कर 30 मिनट तक जारी रहा। डिनर के बाद, कुछ मेहमानों ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात की और मिलने का श्रेय प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने उन मेहमानों से बातचीत फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह मार्की से बाहर पधारे जहां बच्चे पहले से एक पंक्ति में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने स्नेह से बच्चों को चॉकलेट प्रदान की।

महिलाओं की मार्की में हुज़ूर अनवर का पधारना

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ लजना की मार्की में पधारे जहां महिलाओं ने शरफ़ ज़ियारत प्राप्त किया और बच्चियों ने दुआ नज़में और तराने पेश कए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने प्यार से बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार सात बज कर 40 मिनट पर यहां से बैयतुस्सबूह फ्रैनकफोर्ट लिए प्रस्थान किया। वापसी पर भी पुलिस की गाड़ी ने काफिले को मोटरवे तक स्कार्ट किया। लगभग 45 मिनट के सफर के बाद आठ बज कर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ बैयतुस्सबूह तशरीफ़ लाए। पौने नौ बजे हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ

आज मस्जिद के शिलान्यास समारोह में शामिल होने वाले कई मेहमानों ने अपने विचार व्यक्त किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के भाषण ने मेहमानों पर गहरा असर छोड़ा और मेहमान उसे व्यक्त किए बिना न रह सके।

एक मेहमान Mrs. F Edith साहिबा ने कहा: पड़ोसियों के अधिकार से संबंधित ख़लीफा के संदेश ने मुझे बहुत प्रभावित किया है और एक ईसाई के रूप में मेरी इच्छा है कि इसाई भी इस शिक्षा को धारण करे।

एक मेहमान श्री मार्टिन ने कहा ख़लीफा ने महिलाओं का जो स्थान प्रदान किया है वह एक बेहद खूबसूरत धार्मिक शिक्षा है जबकि अन्य मुस्लिम संस्कृतियों में मुझे लगता है कि महिला दबाव और घुटन का शिकार है और पूरी तरह से अपने पति के आधीन दिखाई देती है, लेकिन आप के यहां पुरुष और महिला के स्थान और अधिकार में जो संतुलन है वह मुझे बहुत पसंद आया है।

एक मेहमान Mrs.W.Barbara ने कहा: मुझे तो यह समारोह बहुत अच्छा लगा। ख़लीफा के स्वयं शिलान्यास रखने के लिए आना बड़े सम्मान की बात है। बात सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं रही बल्कि ख़लीफा का लोगों के सम्मान का दायरा भी व्यापक था। ख़लीफा ने जमाअत के अन्य सदस्यों, महिलाओं और बच्चों तक को इस सम्मान में शामिल किया है कि उन्हें भी शिलान्यास की ईंटें रखने में शामिल किया। एकता और सद्भाव के इस माहौल ने मेरे दिल पर गहरा असर किया है?

एक मेहमान Mrs Julia कहती हैं बहुत अच्छे तरीके से आयोजित होने वाले इस समारोह में ख़लीफा के भाषण की यह बात बहुत अच्छा लगी कि अगर बन्दों के अधिकार अदा न किए जाएं तो ख़ुदा की इबादत के क्या अर्थ? मेरी यहाँ आने से पहले यही सोच थी कि इस्लाम कट्टरपंथ उग्रवाद की शिक्षा देता होगा । लेकिन आज के समारोह ने मेरे मन को इस्लाम के बारे में नकारात्मक सोच से मुक्त कर दिया है और इस्लाम की शांति और प्रेम की शिक्षा से अच्छे रंग में अवगत हुई हूँ। मुझे ख़ुशी है कि आप की जमाअत स्पष्ट रूप से अपने आप को उग्रवाद और बिगड़े हुए तथा कथित इस्लाम से दूर रखने और बचाने में सफल रही है।

एक मेहमान Mrs.Dr.Brunn जो पेशे से कृषि अर्थशास्त्री हैं कहती हैं कि ख़लीफा के संबोधन में मुझे इसाई धर्म के प्यार की वास्तविक शिक्षा दिखाई दी है। आपके शब्द पूरी दुनिया में फैलने चाहिए।

शहर Rauschenberg के प्रतिनिधि मेयर Mr. Manfred

Gunther ने कहा: मुझे कार्यक्रम में शामिल होकर ख़ुशी हुई और ख़लीफा के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

प्रो डॉ Brunn साहिब ने कहा कि ख़लीफा के भाषण में उल्लिखित बिंदुओं से मैं सहमति रखता हूँ क्योंकि यह मेरे अपने इसाई नैतिक विश्वासों से समानता रखते हैं। महोदय ने कहा कि मेरी इच्छा है कि प्रदेश हैसन के मुख्यमंत्री की हुज़ूर अनवर से मुलाकात हो।

रेड क्रॉस के कानूनी सलाहकार ने हुज़ूर अनवर के भाषण के बाद कहा " ख़लीफा को में एक पिता की तरह महसूस करता हूँ "

एक मेहमान Mrs. Barbara Buse ने कहा ख़लीफा का संदेश आज के अंधकार युग में एक प्रकाश की हैसियत रखता है। जब ख़लीफा ने मानवता के बारे में बात की तो मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए। यह हमारे लिए बड़ा सम्मान है कि इतनी उंची हस्ती हमारे बीच मौजूद है। महोदया को हुज़ूर अनवर से मुलाकात का भी मौका मिला। मुलाक़ात के बाद कहने लगीं कि मेरा सारा बदन और दिल कांप रहे थे। मैं अपनी भावनाओं को बयान नहीं कर सकती। यह हस्ती पोप जैसी नहीं बल्कि इससे अलग है जिस में विनम्रता और विनय पाया जाता है।

एक मेहमान महिला Mrs Claudia Heerklotz ने कहा: मैं ख़लीफा से बहुत प्रभावित हुई हूँ। आप का भाषण बहुत अच्छा था। जिस बात का मुझे बहुत असर हुआ वह इस्लाम की सहिष्णुता की शिक्षा है।

एक मेहमान Mr Michal Platen ने कहा: मैं इस नर्सरी में काम करता हूँ जिसने इस जगह को प्रशस्त किया। आज दोपहर जब मैं यहाँ काम के लिए आया तो लगता था कि आज शाम तक काम पूरा नहीं होगा और इस जगह को शिलान्यास समारोह के लिए तैयार करने में तीन सप्ताह की आवश्यकता हैं। इसलिए यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि काम इतनी जल्दी पूरा कैसे हो गया। लेकिन मैं ख़ुश हूँ कि काम पूरा हो गया। ख़लीफा का ख़िताब उत्कृष्ट था जिसमें बहुत विषय बयान हुए। ख़िताब के इस हिस्से से बहुत प्रभावित हुआ हूँ जिस में इस्लाम की धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा बयान हुई है और किसी ऐसे धर्म को नहीं जानता जिस में ऐसी शिक्षा हो। उनमें से प्रत्येक अपने धर्म तक ही सीमित है और अन्य धर्मों से संबंध बनाने की कोई कोशिश नहीं है।

शहर मारबर्ग एक दफ्तर की नौकरानी ने कहा: हुज़ूर अनवर ने मानवता से प्यार के पहलू को उजागर किया है, उस ने उनके दिल पर गहरा असर किया। बतौर ईसाई उनके लिए पड़ोसी के अधिकार बहुत महत्वपूर्ण हैं। हर व्यक्ति इस क्षण की खोज में था कि वह ख़लीफतुल मसीह की एक झलक देख ले।

मारबर्ग एक Day Care Facility Centre के प्रबंध निदेशक ने कहा: अगर किसी मुसलमान जमाअत को मस्जिद बनाने की अनुमति होनी चाहिए तो वह केवल जमाअत अहमदिया है।

मेयर के दफ्तर के एक कर्मचारी सदस्य ने कहा कि ख़लीफतुल मसीह ने वे सब बातें जिनकी इच्छा लेकर वह इस कार्यक्रम में शामिल हुई थीं। हुज़ूर का संदेश प्यार था। महोदया ने कहा पवित्र भाषण का एक कान से अनुवाद सुन रही थी और दूसरे कान से हुज़ूर अनवर के मूल शब्द सुन रही थी ताकि हुज़ूर अनवर की मूल आवाज़ भी मेरे कान में पहुंचे। हुज़ूर अनवर की आवाज़ में भी बहुत प्यार और शांति झलक रही थी।

एक बुजुर्ग मेहमान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के पधारने से पहले कहा कि मेरी साढ़े छह बजे एक नियुक्ति है इसलिए मैं ख़लीफा का ख़िताब न सुन पाऊंगा। उनके साथ बैठे दोस्त बताते हैं कि हुज़ूर अनवर का ख़िताब जारी था। जब साढ़े छह बजे तो मुझे कहने लगे कि ख़लीफा का ख़िताब इतना अच्छा है और मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ अब मुझे जाना है और अपना हेडफोन बंद करके रख दिया। मुझे और भी चिंता लग गई क्योंकि हम हुज़ूर के सामने वाले टेबल पर बैठे थे और यह दोस्त सामने से उठते तो बेअदबी होती। अल्लाह जाने उनके दिल में क्या आया उन्होंने फिर अपना हेडफोन पकड़ा और अपने कान में लगा लिया और पूरा संबोधन सुनकर गए और जाते समय धन्यवाद किया और व्यक्त किया कि मैंने आज तक इस जैसा अच्छा धार्मिक कार्यक्रम नहीं देखा और ख़लीफा की बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

फिनलैंड देश से संबंध रखने वाली एक महिला अपने नौ वर्षीय बेटे के साथ इस समारोह में शामिल हुए। महोदया कहने लगीं कि अपने छोटे बेटे को साथ लेकर आई हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि उसके कान में भी ख़लीफतुल मसीह की आवाज़ पड़े और उनकी प्रस्तुत की गई शिक्षाओं से कुछ सीख सके और आप लोगों जैसा ख़ुदा का नेक वजूद बन सके। महोदया ने कहा ख़लीफतुल मसीह जब स्टेज पर आए तो मुझे लगा कि शायद आप के ख़लीफा सख्त स्वभाव के मालिक होंगे। लेकिन वह तो बहुत ही नरम और सरल तबीयत के मालूम होते हैं। मैं ख़लीफा के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुई हूँ। यही मेरे निकट सच्चा इस्लाम है और बाकी सभी मुसलमानों को उन्हीं के पीछे चलना चाहिए। विशेष रूप में ख़लीफा ने सहिष्णुता और पड़ोसियों के अधिकार के बारे में जब इस्लामी बिंदु पेश किया तो मैं बहुत प्रभावित हुई। आप का यह संदेश और शिक्षाएं हरगिज़ ग़लत नहीं हो सकती। महोदया ने कहा कि अब मेरी इच्छा है कि आप की जमाअत में कोई इमाम या कोई व्यक्ति मेरे इस नौ वर्षीय बेटे को कुरआन पढ़ना सिखा दे मैं चाहती हूँ कि यह कुरआन पढ़े और नेक स्वभाव बने।

लॉर्ड मेयर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ख़लीफतुल मसीह एक हिक्मत वाले व्यक्ति लगते हैं। ख़लीफतुल मसीह का ख़िताब बहुत आदरणीय था और आप का शांतिपूर्ण चरित्र आप के भाषण की पुष्टि करता है। उन्होंने कहा कि अफसोस इस बात का है कि मुसलमानों पर इतने अधिक ग़लत आरोप लगाए जाते हैं कि मुसलमानों को अपने जवाब में तर्क देने पड़ जाते हैं हालांकि अगर कोई पश्चिमी दुनिया का बन्दा या ईसाई कोई क्रूर हरकत करे जैसे नॉर्वे में एक हत्यारा ने इसाइयत के नाम पर हत्या की थी तो कोई नहीं कहता कि धर्म का दोष है।

एक मेहमान महिला Kerstin साहिबा जो प्रदेश की सांसद हैं उन्होंने कहा कि उनके लिए बड़े सम्मान की बात है कि ख़लीफतुल मसीह का स्वागत करने का मौका मिला और उनसे मिलने का भी मौका मिला। ख़लीफतुल मसीह बहुत सोच समझ रखने वाले व्यक्ति लगते हैं और शब्दों का चयन समझदारी से करते हैं। आप में शांति और सुकून अनुभव होता है। आप बहुत harmonic और sovereign व्यक्ति लगते हैं।

फिलिप साहिब जो मारबर्ग विश्वविद्यालय में साहित्य पढ़ रहे हैं उन्होंने कहा कि यह समारोह बहुत सफल है और यहां बहुत अच्छा महसूस हो रहा है। ख़लीफतुल मसीह बहुत अंतर्दृष्टि वाले व्यक्ति लगते हैं जो ईमान के अवतार हैं। आप को देख कर लगता है कि आप बहुत गहरी सोच के मालिक हैं। यह बात बड़ी स्पष्ट रूप से लगती है कि आप जो भी कहते हैं, आप इस पर ख़ुद अनुकरण भी करते हैं। ख़लीफतुल मसीह के बयानों को कानून की पुस्तकों में जोड़ लेना चाहिए।

एक महिला मेहमान Simone Irle ने कहा ख़लीफतुल मसीह में एक विशेष प्रकार का रौब है। ख़लीफतुल मसीह ने शांति और प्यार और धर्मों की एक सहिष्णुता के हवाले से कहा है कि किसी को भी इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

है इस बात ने मुझ पर बहुत गहरा असर किया है।

एक मेहमान Maximilian ने कहा कि इस समारोह में एक घरेलू माहौल मिला है। ख़लीफतुल मसीह बहुत नरम इंसान मालूम होते हैं जिन्हें अपनी बात उत्कृष्ट रूप में पेश करनी आती है। आप के ख़िताब की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि सभी को आपस में शांति और सहिष्णुता से रहने की कोशिश करनी चाहिए तो सब इंशा अल्लाह ठीक हो जाएगा।

एक मेहमान Wieland Stotzle ने कहा कि यह एक बहुत दोस्ताना माहौल है। उन्हें विशेष रूप से मेहमानों का स्वागत करने का अंदाज बहुत पसंद आया। वह इस बात से बहुत प्रभावित थे कि साथ अनुवाद भी किया जा रहा था। ख़लीफतुल मसीह बहुत खास इंसान हैं और जो ख़लीफतुल मसीह ने शांति और सहिष्णुता के हवाले से कहा बहुत पसंद आया।

एक मेहमान महिला Rufman ने कहा ख़लीफतुल मसीह बहुत प्रभावित इंसान हैं। उन्हें बहुत अच्छा लगा कि ख़लीफतुल मसीह ने वास्तविक मुसलमानों और दूसरे मुसलमानों में अंतर का उल्लेख किया जो इस्लाम के नाम पर ग़लत हरकतें कर रहे हैं।

एक मेहमान महिला Metzger ने कहा कि जब उन्हें निमंत्रण मिला तो शुरू में बतौर महिला वे कुछ हिचिकचा रही थी। लेकिन इधर आकर यह बात बिल्कुल उलट साबित हुई और उन्हें यहाँ आराम मिला। महोदया ने कहा कि उनके शहर में कछ तुर्की समुदाय के लोग हैं जो अपने आप को समाज से अलग रखते हैं। इस महिला ने कहा कि ख़लीफा साहिब बहुत ही नरम दिल महसूस हो रहे हैं जिनकी राय बहुत बढ़िया है। वह हैरान थी कि ख़लीफतुल मसीह ने जो शांति और एकता की बातें हैं यह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और उन्हें पसंद आईं। इस तरह से समाज में सुधार उत्पन्न किया जा सकता है। उन्हें यह भी अच्छा लगा कि महिलाओं ने भी शिलान्यास के लिए ईंट रखी।

एक मेहमान Manfred Wittig जो हाई स्कूल के शिक्षक हैं ने कहा कि आज के कार्यक्रम में आतिथ्य बहुत उच्च था। उसने कहा कि ख़लीफतुल मसीह का एक रोब प्रकट होता है। जो संबोधन उन्होंने किया वह बहुत ही सूक्ष्म था और बतौर ईसाई वह उन सभी बातों की पुष्टि कर सकता है जो उसने सुनी हैं। उन्हें बहुत अच्छा लगा कि ख़लीफतुल मसीह ने अपने संबोधन में कहा कि सभी धर्मों ने प्यार और भाईचारा की शिक्षा दी है।

एक मेहमान Martin Jenneman जो हाई स्कूल के शिक्षक हैं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ख़लीफतुल मसीह बहुत उच्च नैतिकता के मालिक हैं। उसने कहा ख़लीफतुल मसीह से एक दया और स्नेह प्रकट हो रहा था और यह मालूम हो रहा था कि जो बातें आप कहते हैं उस पर अनुकरण भी करते हैं। ख़लीफतुल मसीह ने जो सहिष्णुता की बात की है यह भी उनके समारोह से नज़र आती है।

एक मेहमान Frandt साहिब ने कहा कि उन्हें इस कार्यक्रम का माहौल बहुत पसंद आया। ख़लीफतुल मसीह एक बहुत ही शांत और शांतिप्रिय व्यक्ति महसूस हो रहे थे।

एक मेहमान Stefan Jesberg ने कहा ख़लीफतुल मसीह एक संतुलित और दोस्ताना व्यक्ति मालूम होते हैं। ख़लीफतुल मसीह में मानव अच्छाइयां स्पष्ट मालूम होती हैं। शिलान्यास समारोह में मुस्लिम महिलाओं और बच्चों को भी शिलान्यास रखने का मौका दिया गया इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

एक मेहमान महिला Edith ने कहा पड़ोसी के विषय में जो शिक्षा ख़लीफतुल मसीह ने पेश की वह शानदार है। ईसाई होते हुए उन्होंने कहा कि काश हमारे यहां भी ऐसी शिक्षा होती।

एक मेहमान Martin ने कहा कि महिलाओं के अधिकारों को जिस तरह से ख़लीफतुल मसीह ने वर्णन किया है वह बहुत अच्छा है उन कलचरों की तुलना में जहां महिला के सभी अधिकार छीन लिए जाते हैं।

एक मुसलमान दोस्त जो समारोह की दौरान दूसरी पंक्ति में खामोश से बैठा हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुन रहा था। इस के बाद महोदय को हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य नसीब हुआ तो हुज़ूर अनवर के मुबारक अस्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि अपनी भावनाओं पर नियंत्रण ही नहीं पा सका और अपने आप उसकी आंखों में आंसू आ गए। कहने लगा कि मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को इतने बड़े व्यक्ति से हाथ मिलाने का सम्मान मिला है। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं अपनी भावनाओं को बयान कर सकूँ।

इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया कवरेज

मस्जिद रोनहायम और मस्जिद मारबर्ग के शिलान्यास के अवसर पर जर्मनी के इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने बड़ी व्यापक कवरेज दी। इस इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का विवरण यह है कि एक टीवी चैनल और 22 अख़बारों के द्वारा मस्जिद रोनहायम और मस्जिद मारबर्ग के शिलान्यास की 26 ख़बरें एक करोड़ 89 लाख 90 हज़ार 789 लोगों तक पहुंचीं।

टीवी चैनल

Rheinland Pfalz / Hessen

अख़बार	**संख्या**
Allgemeine Zeitung,	174158
Arcor	1274500
Bild ıde	9132186
Echo onlin	146620
FAZ ınet	3833239
Focus online	3956478
Gelnhauser Tageblatt	778
Giebener Anzeiger	46296
Hochster Kreisblatt	
Kreis-Anzeiger	7191
Lauterbacher Anzeiger	529
Mittelhessen ıde	44135
Nassauische	
Neue Presse	
Neu Isenburger	
Neue Press	
Oberhessische Presse	33579
Oberhessische Zeitung	12445
Russelsheimer Echo	
Schwabische ıde	220110
Taunus Zeitung	
Usinger Anzeiger	1814
Wiesbadener Kurier	83920
Wormser Zeitung	22929
कुल	18990907

(ऑनलाइन अखबार schwaebische ıde ने अपने इंटरनेट प्रकाशन में इस शीर्षक के साथ ख़बर प्रसारित कि " मस्जिद का उद्घाटन नरम मिज़ाज ख़लीफा" दूसरा शीर्षक यह लगाया कि "आगस बर्ग में मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर Bavaria लोगों की सभा " तीसरा शीर्षक यह लगाया कि " बेमेल दाढ़ियों का इस्लाम नहीं

अक्सर जर्मनों की यह धारणा है कि इस्लाम एक सीमित क्षेत्र की तरह है। बहुतों को इस्लाम में ख़तरा भी नज़र आता है। लेकिन विभिन्न मुसलमानों के बीच कितना अंतर है इसका अंदाज़ा पिछले दिनों दक्षिण के क्षेत्रों में लगाया जा सकता था। वालड होट और आगस बर्ग में जमाअत अहमदिया ने नई मस्जिदों का उद्घाटन किया। विरोध अधिकतर सुन्नी क्षेत्रों से हुआ।

इस जमाअत को करीब से देखना एक सुखद अनुभव है। आगस बर्ग के मोहल्ले Oberhausen में बच्चे उत्सव के कपड़े पहने ख़ुशी और नेकी के गीत गा रही थी। जवान आदमी सुन्दर सूट पहने ईसाई मेहमानों की तरह मेज़बानी कर रहे थे कि मानो उनमें से प्रत्येक मेहमान हो। धूप निकली हुई थी। फिर जमाअत के ख़लीफा तशरीफ़ लाते हैं। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद, सारे विश्व में फैले हुए लगभग सौ मिलियन अहमदियों के निर्वाचित इमाम हैं। अगर schwaben के क्षेत्र का सफर केवल जमाअत के ख़लीफा को देखने के लिए किया जाता तो यह भी पर्याप्त था। आपके व्यक्तित्व प्रभाव वाला है। 66 साल आप की उम्र है, और आप बहुत अधिक ख़ुश मिज़ाज हैं।

यह कोई बेमैल दाड़ियों और ऐसे युवाओं का इस्लाम नहीं है जो बंदूक उठाए (यदि संभव हो तो कटे हुए सिर के साथ) तस्वीरें खिंचवाते हैं। अहमदियों पर तो

ख़ुद उनके वतन पाकिस्तान में प्रतिबंध है। उन्हें कष्ट दिया जाता और कत्ल किया जाता है। इन का अपराध केवल इतना है कि वह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बाद भी किसी सुधारक के आगमन को संभव मानते हैं।

आप बिना किसी संकोच के कहते हैं कि इस्लाम प्रेम का धर्म है। नफरत का नहीं। अहमदियों को घृणा का सामना है। कुछ देशों में अहमदी होना जीवन के लिए खतरा है। ख़लीफा इसलिए पाकिस्तान में नहीं बल्कि लंदन में रहते हैं। जर्मनी में आप का आवास जमाअत के केंद्र फ्रैनकफोर्ट में होती है।

आगस बर्ग में जमाअत की मस्जिद में वास्तुकला के आधार पर कई खूबियां हैं। निर्माण में सादगी स्पष्ट है। चाहे नीले कांच के बने गुंबद हो या उचित रंग में लिखी हुई तहरीरें। पुरुषों और महिलाओं के हॉल अलग हैं। समारोह के दौरान पुरुष और महिलाएं अलग मार्क में बैठे थे।

ग्रीन पार्टी की Christine Kamm इस समारोह से प्रभावित हुई हैं। जिसमें सादे और अच्छे खाने प्रस्तुत किए गए हैं। वह कहती हैं कि यह हमारे लिए एक उपयोगी बात है। उप मेयर Stephan Kafer अपने मेजबानों को शांति का दूत कहते हैं। सब लोग इस शहर में ख़ुश नज़र आ रहे हैं। यह शहर धार्मिक शांति का शहर है। ख़लीफा अपने संबोधन में यह बता रहे हैं कि आज के युग में चर्च, यहूदी इबादत स्थल और मस्जिदें, ये सब खतरे में हैं क्योंकि मनुष्य का ख़ुदा में विश्वास कायम नहीं रहा। आप कहते हैं कि हमारा ख़ुदा सब मनुष्यों का ख़ुदा है और अन्त में कहते हैं कि हम अच्छे या बुरे हैं यह निर्णय ख़ुदा हमारी मौत के बाद ख़ुद करेगा। (अखबार Allgemeine Zeitung Mainz ने अपने 18 अप्रैल 2017 ई के प्रकाशन में इस शीर्षक के साथ ख़बर प्रसारण कि " अहमदी दो नई मस्जिदें बनाएंगे) अहमदिया मुस्लिम जमाअत प्रांत hessen दो नई मस्जिदों का निर्माण कर रही है। जमाअत के इमाम (हज़रत) मिर्ज़ा मसरूर अहमद मंगलवार शाम को रयोनहायम में एक मीनार वाली मस्जिद का शिलान्यास रखेंगे। बुधवार को जमाअत के ख़लीफा मारबर्ग में शिलान्यास रखने के लिए जाएँगे। पिछले जुम्अ: को हज़ारों अहमदियों ने रोनहायम में जमाअत के ख़लीफा कए अनुसरण में जुम्अ: की नमाज़ अदा की। ख़लीफा लंदन में रहते हैं। सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया अपने बयान के अनुसार कई लाख लोगों पर आधारित हैं। जर्मनी में जमाअत के सदस्यों की संख्या 45 हज़ार है जिनमें से पन्द्रह हज़ार प्रांत Hessen में रहते हैं। यह बात जमाअत जर्मनी के अमीर, अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र ने मंगलवार को फ्रैंकफर्ट में जमाअत के ख़लीफा के आगमन के अवसर पर बताई। जर्मनी में 51 मस्जिदों में से आधी हैसन हैं। पहली मस्जिद हमबरग में 1954 ई में बनाई गई। जबकि दूसरी मस्जिद 1959 में बनाई गई जो नूर मस्जिद के नाम से जानी जाती है। फ्रैंकफर्ट ही में जमाअत जर्मनी का केंद्र भी मौजूद है। जर्मनी में कुल सौ मस्जिदें बनाने की योजना है। जबकि इस समय लगभग दस मस्जिदों के निर्माण के सिलसिले में काम जारी है।

(अख़बार Frankfurter Allgemeine ने अपने 18 अप्रैल 2017 ई के प्रकाशन में इस शीर्षक के साथ ख़बर प्रसारित कि " ख़लीफा सामूहिक शिलान्यास का आयोजन " दूसरा शीर्षक यह लगाया कि " जमाअत अहमदिया दो नई मस्जिदों का निर्माण कर रही है ") मंगलवार को रोनहायम और बुधवार को मारबर्ग में अहमदिया मुस्लिम जमाअत हैसन में एक समय दो मस्जिदें निर्माण कर रही है। हैसन में जमाअत के 15 हज़ार सदस्य हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत प्रांत हैसन में दो नई मस्जिदों का निर्माण कर रही है। जमाअत के इमाम (हज़रत) मिर्ज़ा मसरूर अहमद मंगलवार शाम को रोनहायम में एक मीनार वाली मस्जिद का शिलान्यास रखेंगे। बुधवार को जमाअत ख़लीफा के मारबर्ग में शिलान्यास रखने के लिए जाएँगे। पिछले जुम्अ: को हज़ारों अहमदियों ने रोनहायम में जमाअत के ख़लीफा के अनुकरण में जुम्अ: की नमाज़ अदा की। ख़लीफा का आवास लंदन में है। सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया अपने बयान के अनुसार कई लाख लोग हैं। जर्मनी में जमाअत के सदस्यों की संख्या 45 हज़ार है जिनमें से पन्द्रह हज़ार प्रांत हैसन में रहते हैं। यह बात जमाअत जर्मनी अमीर अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र ने मंगलवार को फ्रैंकफर्ट में जमाअत के ख़लीफा के आगमन के अवसर पर बताई।जर्मनी 51 मस्जिदों में से आधी हीसन हैं। पहली मस्जिद हमबरग में 1954 में बनाया गया। जबकि दूसरी मस्जिद 1959 में किए गए जो नूर मस्जिद के नाम से जानी जाती है। फ्रैंकफर्ट ही में जमाअत जर्मनी का केंद्र भी मौजूद है। जर्मनी में कुल सौ मस्जिदें बनाने की योजना है। जबकि इस समय लगभग दस मस्जिदों के निर्माण के सिलसिले में काम जारी है।

20 अप्रैल 2017 (दिन गुरुवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 15 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक, ख़त और रिपोर्ट देखी और अपने दस्ते मुबारक से इन पत्रों और रिपोर्टों पर निर्देश फरमाए। हुज़ूर अनवर की सेवा में दैनिक दुनिया के विभिन्न देशों से ख़त, फैक्सज़ और मेल आदि प्राप्त होते हैं और इसी तरह यहां जर्मनी के विभिन्न जमाअतों के सदस्यों द्वारा भी दैनिक सैकड़ों ख़त प्राप्त होते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दैनिक साथ साथ यह सारी डाक, पोस्ट और रिपोर्ट देखते और निर्देश देते हैं। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़े ज़ोहर असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

फैमली मुलाकात

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार सवा छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों मुलाक़ात शुरू हुई। आज शाम इस सत्र में 39 परिवारों के 148 लोगों को अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाकात का सौभाग्य मिला। इन सभी परिवारों और दोस्तों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दी। आज मुलाक़ात का शरफ पाने वालों में फ्रैंकफर्ट के विभिन्न क्षेत्रों के अतिरिक्त Boeblingen, Moerfelden Walldorf, Bad Hersfeld Nidda , Bad Nauheim आफन बाग़, कोबलनज़ Koeln, Bad Vilbel Vechta, Eppertshausen Dietzenbach, वेज़बादन Dreieich, Bensheim Nauheim, रसेल हैम गीज़न, Schluechtern Ulm Donau से आने वाले परिवार और दोस्त शामिल थे। कुछ परिवारों और दोस्त बड़े लंबे सफर तय करके पहुंचे थे। Ulm Donau से आने वाली परिवार 310 किलोमीटर तय करके पहुंचे थे। जर्मनी की जमाअतों से आने वाले इन परिवारों के अतिरिक्त दुबई और पाकिस्तान से आने वाले दोस्तों ने भी अपने प्यारे हुज़ूर मिलने का सौभाग्य हासिल किया। आज का दिन इन परिवारों के लिए असामान्य सआदतों और बरकतों का दिन था जो कुछ क्षण उन्होंने अपने आक़ा की निकटता में खर्च किए वे उनके सारे जीवन की पूंजी और उनके लिए और उनके बच्चों के लिए यादगार क्षण थे। उनमें से प्रत्येक बरकत समेटे हुए बाहर आया। बीमारों ने अपनी चिकित्सा के लिए दुआएं हासिल कीं। परेशानियों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी पीड़ा दूर होने के लिए दुआ का अनुरोध किया और दिल का संतोष पाकर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। कुछ अपने विभिन्न मामलों और व्यापार के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया। छात्रों छात्राओं ने अपने परीक्षा में सफलता के लिए अपने प्यारे हुज़ूर से दुआएं प्राप्त की। सारंक्ष यह कि प्रत्येक ने अपने मेहबूब आक़ा की दुआओं से भाग हिस्सा पाया और यह मुबारक क्षण उनके लिए अमृत बन गए।

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम 8 बजकर 10 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद आदरणीय आबिद वहीद ख़ान इन्चार्ज प्रेस एंड मीडिया दफ्तर और आदरणीय अब्दुल समीई साहिब कार्यवाहक Maintenance बैयतुस्सबूह ने हुज़ूर अनवर से दफ्तर की मुलाकात का सौभाग्य पाया।

इस के बाद कुछ देर के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। पौने नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास पर तशरीफ़ ले गए।

21 अप्रैल 2017 (दिन जुम्अ:)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सुबह

सवा पांच बजे तशरीफ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल विभिन्न दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। आज जुम्अ:का मुबारक का दिन था। जुम्अ: की नमाज़ के पढ़ने का प्रबंधन बैयतुस्सबूह से लगभग 34 कलोमीटर दूरी पर रोनहायम के क्षेत्र में व्यापक मार्कीज़ लगाकर किया गया था। यह वही जगह है जहां इससे पहले 14 अप्रैल को पिछला जुम्अ: अदा किया गया था। रोनहायम में जमाअत ने अपनी मस्जिद निर्माण के लिए 2750 वर्ग मीटर ज़मीन ख़रीदी हुई है। इस ज़मीन पर और उसके आसपास के क्षेत्र में तीन मारकीज़ लगाकर 6 हज़ार जमाअत के लोंगों के लिए जुम्अ: की नमाज़ के पढ़ना का प्रबंध किया गया था। जमाअत के इसी क्षेत्र में 18 अप्रैल दिन मंगलवार को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत रोनहायम की मस्जिद का शिलान्यास रखा था। तीनों मारकीज़ की विशालता और सीमित जगह रखते हुए इस बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के इरशाद और निर्देश के आलोक में प्रशासन ने फ्रैंकफर्ट के आसपास एक सीमित क्षेत्र तक जमाअतों को रोनहायम आने की हिदायत की थी और बाकी जमाअतों के लिए यही निर्देश की गई थी कि अपने सेंटर में जुम्अ: की नमाज़ अदा करें। अत: इस बार 6 हज़ार के लगभग जमाअत के लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर के अनुसरण में जुम्अ: की नमाज़ अदा करने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ दोपहर ठीक डेड़ बजे बैयतुस्सबूह से रवाना हुए और आधे घंटे के सफर के बाद दो बजे यहां तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना मार्क में पधारे और ख़ुत्बा जुम्अ: फरमाया। (ख़ुत्बा जुम्अ: का पूरा पाठ अखबार बद्र अंक नंबर 19 दिनांक 11 / मई 2017 में प्रकाशित हो चुका है) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: सीधे MTA अंतरराष्ट्रीय द्वारा दुनिया भर में live प्रसारित हुआ और इसके विभिन्न भाषाओं में अनुवादों भी हुए और live प्रसारित हुए।

ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जुम्अ: की नमाज़ और अस्र की नमाज़ जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ रोनहायम वापस बैयतुस्सबूह, फ्रैंकफर्ट के लिए रवाना हुए और 3 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ बैयतुस्सबूह तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अपने आवसीय भाग में पधारे।

इस के बाद 5 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और राष्ट्रीय सचिव माल जर्मनी आदरणीय तारिक महमूद साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ से दफ्तर में मुलाकात की।

इस के बाद 5 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल आदरणीय अब्दुल अज़ीज़ डोगर साहिब मरहूम की ताज़ियत (संवेदना) लिए उनके बेटे अब्दुल ग़फूर डोगर साहिब के घर पधारे। अब्दुल अज़ीज़ डोगर साहिब की 11 जनवरी 2016 ई को मृत्यु हुई थी। मरहूम की उम्र 87 साल थी। आप मास्टर चिराग़ दीन साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 15 जनवरी 2016 ई में मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर किया था और बताया था कि मरहूम को सारी उम्र जमाअत सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। शुरुआत में लगभग 31 साल हज़रत मुस्लेह मौऊद द्वारा स्थापित दवाखाना में मानव सेवा का काम किया। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने ख़ुद ही उन्हें तिब(यूनानी हकीमी) सिखाई थी इस तरह आप को वफात तक विभिन्न जमाअत के पदों में सेवा करने की तौफ़ीक़ मिलती रही। इस के बाद 6 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ वापस बैयतुस्सबूह पधारे।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी लजना इमाअल्लाह जर्मनी और सदर लजना की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

कार्यक्रम के अनुसार आज राष्ट्रीय कार्यकारिणी लजना इमाअल्लाह जर्मनी और लजना की सभी मज्लिसों की सदरों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात थी। मुलाक़ात का प्रबंध स्पोर्ट्स हॉल में किया गया था। 6 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ पधारे और मुलाक़ात की शुरुआत में दुआ करवाई। इस मुलाक़ात में राष्ट्रीय कार्यकारिणी लजना जर्मनी की 25 मेम्बर के अलावा 26 क्षेत्रीय सदर और 257 स्थानीय मजलिसों की सदर शामिल थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ राष्ट्रीय ने जनरल सैक्रेटरी से मज्लिसों की संख्या और उनकी मज्लिसों से प्राप्त होने वाली मासिक रिपोर्ट के संबंध में पूछा। उस पर जनरल सैक्रेटरी ने बताया कि मज्लिसों की संख्या 271 है और नियमित रिपोर्ट भिजवाने वाली मज्लिसों संख्या की 256 है, अर्थात 95 प्रतिशत है। हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी ने बताया कि ऐसी दो मज्लिसों हैं जिन्होंने पिछले तीन महीने से कोई रिपोर्ट नहीं भिजवाई। हुज़ूर अनवर ने इन दोनों मज्लिसों की सदरों से रिपोर्ट न भिजवाने का कारण पीछा और नियमित हर महीने रिपोर्ट भिजवाने की हिदायत फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने हिदायत फ़रमाई कि डाक पता या फैक्स या मेल पर भिजवा दिया करें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया काम में तेज़ी से होनी चाहिए और रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद उन पर टिप्पणी सात दिनों के अंदर सदर लजना के हस्ताक्षर के साथ मज्लिसों में पहुँच जाना चाहिए। सदर साहिबा लजना ने बताया कि रिपोर्ट हर अगले महीने की 10 तारीख़ तक आती है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मज्लिसों के सदर 10 तारीख़ तक रिपोर्ट भिजवा सकती हैं वे हाथ खड़ा कर बताएँ। उस पर सदरों ने अपने हाथ खड़े किए और कहा कि वह रिपोर्ट तैयार करके 10 तारीख़ तक भिजवा सकती हैं।

हुज़ूर अनवर ने राष्ट्रीय सैक्रेटरी शिक्षा की पूछा कि वह साल में कितनी परीक्षा लेती हैं? इस पर सैक्रेटरी शिक्षा ने निवेदन किया कि हम तिमाही परीक्षा लेते हैं और परीक्षा देने वाली मेम्बरों की संख्या 45 प्रतिशत हे। सैक्रेटरी शिक्षा ने हुज़ूर अनवर की सेवा में मार्गदर्शन का अनुरोध किया कि इस संख्या को कैसे बढ़ाया जाए। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कुछ महिलाओं के घरेलू मस्ले और बच्चे छोटे होते हैं। साल में एक परीक्षा में शामिल हो जाया करें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी तजनीद से संख्या के आधार पर बड़ी मज्लिस के संबंध में फूछा और क्षेत्रीय अध्यक्ष फ्रैंकफर्ट से फ्रैंकफर्ट की संख्या के बारे में पूछा। इस पर क्षेत्रीय अध्यक्ष ने बताया कि फ्रैंकफर्ट क्षेत्र की तजनीद 847 है और क्षेत्र में 15 मज्लिसें हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने हमबरग की मज्लिसों बारे में पूछा। उस पर यह बताया गया कि हमबरग की 15 मज्लिसें और तजनीद 808 है और वहाँ सबसे बड़ी मजलिस बैयतुर्रशीद है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी तब्लीग़ से बैअतों का टारगेट पूछा। इस पर सैक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हमारा विशेष लक्ष्य नहीं है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जलसा सालाना ब्रिटेन तक आपके लिए 100 बैअतों का टारगेट है और जुलाई तक तीन महीने का समय है। अपने घर, कार्यकारिणी से शुरू करें और तब सक्रिय सदर को कह सकती हैं और आपके पास 1800 दायात इलल्लाह हैं। 100 बैअतों के टारगेट आप इन पर विभाजित करें तो हर 18 सदस्यों को एक बैअत का टारगेट दें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया एक ऐसा पम्फेलट बनाएँ जिस पर ख़त्म नबुव्वत का मतलब, सदाकत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दलीलें, चाँद ग्रहण के निशान, ख़िलाफत के महत्त्व आदि के संदर्भ में एक दो वाक्य में बुनियादी ज्ञान प्राप्त हो सके और तब्लीग़ के लिए सदस्य इससे लाभ प्राप्त कर सकें।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी प्रकाशन ने बताया कि तिमाही पत्रिका "ख़दीजा" नासरात का रिसाला " गुलदस्ता" और अलफज़ल इंटरनेशनल में ख़दीजा के 4 पृष्ठों पर आधारित अंक प्रकाशित होता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप की कुल तजनीद 13 हज़ार 500 है। क्या आप इस जानकारी दे सकती हैं कि कितनी उर्दू और कितनी जर्मन पढ़ने वाली हैं और इसी तरह उर्दू, अंग्रेज़ी, जर्मन कितनी लिखना पढ़ना जानती हैं? हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए कहा कि उसे अपने रिपोर्ट फार्म में शामिल कर लें और यह जानकारी एकत्रित करें।

हुज़ूर अनवर ने राष्ट्रीय सैक्रेटरी प्रशिक्षण से पर्दा की गुणवत्ता के विषय में पूछा और समस्त उपस्थित सदरों से पूछा कि क्या जो सदर मेरे सामने बैठी हैं क्या वे इसी हुलिया में बाहर भी होती हैं? इस पर सदरों ने एक आवाज़ में इस बात का समर्थन किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बाल cover न करने की शिकायतों आती हैं। मज्लिसों की कार्यकारिणी में सिर पर हिजाब लेना, बाल ढंकना, लंबा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2019-2017/45- Vol. 2 Thursday 21 September 2017 Issue No. 38

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

कोट पहनना यह न्यूनतम शर्म है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया " अलहयाओ मिनल ईमान " शर्म ईमान का हिस्सा है। मूल लज्जा है कि सिर को ढांको और अपनी चादेरें ओढ़ो, शरीर के अंग प्रकट न हों, ढीला लिबास हो। बहुत सारी जमाअत में नई आने वाली ये शिकायत करती हैं कि शर्म के स्तर अच्छे नहीं हैं। अब यह जर्मन महिला सामने बैठी हैं उसने अपना सिर अच्छी तरह कवर किया है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया ऐसे सदस्य जिन्हें सैक्रेटरी बना दिया जाता है उनके प्रशिक्षण की गुणवत्ता ऐसी नहीं होते तो उन्होंने दूसरों का प्रशिक्षित क्या करना है। इसलिए अपनी पसंद की कार्यकारिणी न बनाएं, यह देखें कि क्या वह अपने विभाग की Requirement को पूरा कर रही है। अगर सैक्रेटरी शिक्षा है तो धार्मिक ज्ञान हो, अध्ययन करने वाली हो, सैक्रेटरी तब्लीग़ ऐसी हो जिसको तब्लीग़ का शौक हो, सैक्रेटरी ज़ियाफत के लिए ऐसी सदस्य हों जिन्हें आतिथ्य के शौकीन हो।

हुज़ूर अनवर ने राष्ट्रीय सैक्रेटरी प्रशिक्षण से पूछा कि प्रशिक्षण सेमिनार का क्या फायदा हुआ। क्या आपने कभी feedback लिया? हुज़ूर अनवर ने सदरों से भी इस विषय में पूछा इस पर एक क्षेत्रीय अध्यक्ष ने संगोष्ठी के विषय में सकारात्मक रंग में अपने विचार व्यक्त किए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कई माताएं ऐसी हैं जो पढ़ी-लिखी नहीं हैं। उनकी आपस में बेटियों से दोस्ती होनी चाहिए। दोस्ती होगी तो मस्ले हल होंगे। कई माताएँ ज़ातों में उलझी हुई हैं। कोई बट है, चौधरी है तो इस लिहाज से माताओं को प्रशिक्षण दें। यह बात भी साथ साथ है इस पर नज़र रखने की ज़रूरत है।

प्रशिक्षण विभाग का यह काम भी है कि जो लड़कियां बहुत जल्द ख़ुलअ का अनुरोध दे देती हैं उन्हें समझाएं कि जल्दबाजी न करें।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी नासरात को निर्देश देते हुए फरमाया कि नासरात के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाएँ जो उनकी रुचि के हूँ। राष्ट्रीय इज्तिमाओं में भी नासरात के अलग कार्यक्रम हूँ। अलग मार्की हो नासरात के लिए भाषणों आदि के कार्यक्रम हो, वयस्कों के व्याख्यान हूँ और सदर लजना का भाषण हो, जर्मन में उन्हें समझाएं कि उन्हें समझ आए। नासरात को Innvolve करें। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि हमारी एक मज्लिस है।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी खिदमते ख़लक से उनके कार्यों और परियोजनाओं के विषय में पूछा। जिस पर सैक्रेटरी ख़िदमते ख़लक ने बताया कि हमारे कार्यक्रमों में बल्ड डोनेशन शिविर, शरणार्थियों की सहायता, दहेज कोष सहायता और लजना हेल्पलाइन शामिल हैं।

तहरीक जदीद विभाग और वक्फे नौ ने अपने आंकड़े बताए और जमाअत की तरफ से प्राप्त हुए लक्ष्य के विषय में बताया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने विभाग मुहासिबा (आत्मनिरीक्षण) से इस विभाग के आधीन होने वाले काम के विषय में पूछा।

सैक्रेटरी माल से हुज़ूर अनवर ने कमाने वाली सदस्यों की संख्या और लजना के वार्षिक बजट के संदर्भ में पूछा। जिस पर सैक्रेटरी ने बताया कि कमाने वाली सदस्यों की संख्या 1086 है और लजना का वार्षिक बजट 7 लाख 89 हज़ार 590 यूरो है।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सहायक सदर (वसीयत) से मूसियों की संख्या के बारे में पूछा इस पर सहायक सदर ने बताया कि मूसियों की कुल संख्या 5228 है। हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए कहा कि जो कमाने वाली सदस्य हैं उनकी वसीयत करने की कोशिश करें। कमाने वाली 1086 में से 500 की वसीयत करें।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सहायक सदर (विभाग रिश्ता नाता) ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि एक तिमाही में चार से पाँच रिश्ते तय हो जाते हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप इस बात की भी समीक्षा करें कि कितने रिश्ते कायम रहते हैं। इस के बाद सदस्यों ने हुज़ूर अनवर से सवाल की अनुमति ली।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

प्लेग के काले वृक्ष लगाए गए हैं। अत: यह भविष्यवाणी कई हज़ार विज्ञापनों तथा पत्रिकाओं के द्वारा मैंने इस देश में प्रकाशित की। पुन: कुछ समयोपरान्त प्रत्येक ज़िले में प्लेग फूट पड़ी। अत: अब तक लगभग तीन लाख प्राणों की क्षति हुई और हो रही है तथा ख़ुदा तआला ने कहा कि अब इस देश से प्लेग कभी दूर नहीं होगी जब तक ये लोग अपने अन्दर परिवर्तन न करें।

47. सैंतालीसवां निशान - यह है कि चिराग़दीन नामक एक व्यक्ति निवासी जम्मू मेरे मुरीदों में सम्मिलित हुआ था फिर मुर्तद (विमुख) हो गया और रसूल होने का दावा किया तथा कहा कि मैं ईसा का रसूल हूं। इस ने मेरा नाम दज्जाल रखा और कहा कि हज़रत ईसा ने मुझे डंडा दिया है ताकि इस दज्जाल को इस डंडे से क़त्ल करूं। मैंने उसके बारे में यह भविष्यवाणी की वह ख़ुदा के प्रकोप से रोग अर्थात् प्लेग से मरेगा और ख़ुदा उसका विनाश करेगा। अत: वह 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों पुत्रों सहित तबाह हो गया।

48. अड़तालीसवां निशान - यह है कि मैंने मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी के बारे में भविष्यवाणी की थी कि वह तीन वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। अत: वह तीन वर्ष की अवधि के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

49. उनन्चासवां निशान - यह है कि मैंने भूकम्प के बारे में भविष्यवाणी की थी जो अख़बार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित हो गई थी कि एक भयंकर भूकम्प आने वाला है जो पंजाब के कुछ भागों में एक बड़े विनाश का कारण होगा। भविष्यवाणी की पूर्ण इबारत यह है :- भूकम्प का धक्का عفت الديار محلها و مقامه। अत: वह भविष्यवाणी 4 अप्रैल 1905 को पूरी हुई।

50. पचासवां निशान - यह है कि मैंने फिर एक भविष्यवाणी की थी कि इस भूकम्प के पश्चात् बसंत के दिनों में पुन: एक और भूकम्प आएगा। इस इल्हामी भविष्यवाणी की एक इबारत यह थी - "फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई।" अत: 28 फ़रवरी 1905 ई. को वह भूकम्प आया और पर्वतीय स्थानों में धन एवं प्राणी के विनाश द्वारा बहुत क्षति हुई।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 228-231)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad